

निग नवल दिनऱ कूमान मिश्र

निग नवल शुंखलाम सुराष चंद्र यादवयन कछिग "निग नवल सुराष चंद्र यादव" जर्ब नाजदव
मंडलयन कछिग "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" केन वाद गसन याथी

गजइ ओकून

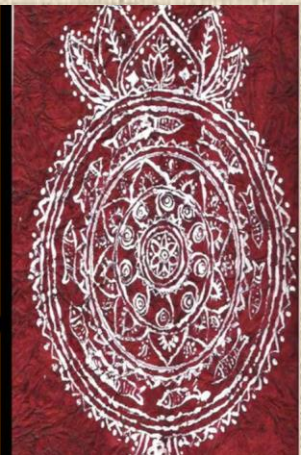
विदह-प्रथम मेथिली याजित व्ही-यपिका (विदह www.videha.co.in) यरानसं

विदह: मेथिली साहित्य आखलन



Videha
e-Learning

Gajendra Thakur



विदह मेथिली साहित्य आखलन: मान्खिमिह संकृगाम्



उे याथीक सर्वाधिकार सुरजिा अछि। कौयीनाइँट (©) चान्कत लिखिा अनुमति क विना याथीक काना अंशक छाया प्रगिावै निकोउिग सहिा इल्लकद्रोनिा अथवा योपिा, काना माध्यमसँ, अथवा इल्लक संधरुध वा युनप्रयोगक प्रधाली इल्लाना काना नूयम युननूयादिग अथवा संचालिा-प्रसारिा नै कजल जा सकैग अछि।

(c) 2000-2023. सर्वाधिकार सुरजिा। विदरुध प्रकाशिा सरुटा नवना आ आर्काइवक सर्वाधिकार नवनाकान आ संधरुधकार्फाक लगम छहि। रालसनिा गाछ उ सन 2000 सँ यादूसिरीजयन छल

http://www.geocities.com/.../bhal_sari_k_gachh.html,

<http://www.geocities.com/ggajendra> आदि लिंकयन आ अखना 5 जलाइँ 2004 क यादु http://gajendrat.hakur.bl.ogspot.com/2004/07/bhal_sari_k-gachh.html

(किछ दिन लल http://vi.deha.com/2004/07/bhal_sari_k-gachh.html लिंकयन, आ wayback machine of https://web.archive.org/web/*/vi.deha 258 capture(s) from 2004 to 2016- <http://vi.deha.com/> रालसनिा गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक अग्री(गटन) कन नूयम इन्टरनरयन मैथिलीक प्राचीनाम उपसिङ्गक नूयम विश्रमान अछि। इ मैथिलीक यहिल इन्टरनर यपिका थिक जवन नाम वादम 1 जनवरी 2008 सँ "विदरु" यओलै इन्टरनरयन मैथिलीक प्रथम उपसिङ्गक यात्रा विदरु- प्रथम मैथिली याजिक इ यपिका चनि यहँवल अछि, उ <http://www.vi.deha.co.in/> यन इ प्रकाशिा दइल अछि। आव "रालसनिा गाछ" जालवृफ 'विदरु' इ-यपिकाक प्रकाक संग मैथिली राबाक जालवृफक अग्री(गटन)क नूयम प्रयुक्त रुस रहल अछि। विदरु इ-यपिका ISSN 2229-547X VI DEHA

(c)2000-2023. सर्वाधिकार लखकाचीन आ जगस लखकक नाम नै अछि। गगस संपादकाचीना विदरु- प्रथम मैथिली याजिक इ-यपिका ISSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजदु ओकना। Editor: Gajendra Thakur.

नवनाकान अयन मेलिक आ अप्रकाशिा नवना (जवन मेलिकगाक संपूर्ध उफनदायिदु लखक गधक मध छहि) editorial.staff.vi.deha@gmail.com कँ मल अटैवमधक नूयमँ .doc, .docx, .rtf वा .txt खोमरुम यओ सकै छथि। अगस प्रकाशिा नवना सरुक कौयीनाइँट लखक/संधरुधकार्फा लाकनिाक लगम नइगहि। संपादक 'विदरु' प्रथम मैथिली याजिक इ यपिका उ इ-यपिकाम इ-प्रकाशिा/ प्रथम प्रकाशिा नवनाक प्रिंट-वव आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनुदिग आर्काइवक इ-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार नखैग छथि। (The Editor, Vi deha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

उ इ-यपिकाम काना नोयरीक/ यानिश्मिकक प्रावधान नै छै। ग नोयरीक/ यानिश्मिकक इच्छुक विदरुसँ नै जओथि, स आग्रहा नवनाक संग नवनाकान अयन सजिय यनिवय आ अयन चैन कजल (गल खरा यओगाह, स आशा कनैग छै। नवनाक आंम टाळ्य नइय, उ इ नवना मेलिक अछि, आ यहिल प्रकाशनक हगु विदरु (याजिक) इ यपिकाकँ दल जा रहल अछि। मल प्राय दायवाक वाद यथासरख शीघ्र (साग दिनक रीगन) जवन प्रकाशनक अंकक सूचना दल जायग।

अहि मी यमिकारु मासक 01 आ 15 मिथिकु मी प्रकाशित कल जल्ल अछि। ISSN: 2229-547X

© 2023 "Nita Naval DINESH KUMAR MISHRA)" by Gajendra Thakur (in
Mithili) from Vi deha www.videha.co.in Archive.

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र



दिनेश कुमार मिश्र, आर्य.आर्य.टी.

खगयूनसँ सिविल इंजीनियरिङ म बी. ए. १९६८म आ
सुप्रानल इंजीनियरिङम एम.ए. १९७०मा मिथिलाक वाढिक
अक्युटी। मिथिलाक मारा-मारी सर धानयन किगाव प्रकाशित। उफन
विद्वान की अथा कथा (१९९०), कासी- उम्र कौद स सजा-अ-मोग
एक (१९९२) वीदिनी महानंदा (१९९४), वाया यउ ववूल का-
वाढ नियंत्रण का नरुय (२०००), वगाव यन मजवून मिथिला की
कमला नदी (२००४), गुहरी नदी ओन एकनीकी माउ- डूक
(२००१), डूली याटन क बीच मं- कासी नदी की कहानी (२००६)
एथा वागमरी की सङ्गि (२०१०)।

युर्वेयिका:

दिनेश कुमार मिश्रक 'डूली याटन क बीच म' कासी नदीक अतिहासिक
आत्मकथा थीक, आ मिथिलाक आन धान सरक अतिहासिक
आत्मकथा सह लिखन छथि जना वीदिनी महानंदा, वागमरी की

सङ्गीत, दूर यात्रन क बीच मं.. (कासी नदी की कहानी), न घाट न घन, वगावण यन मजवून मिथिला की कमला नदी, गुाही नदी ओन तकनीकी माउ-रूक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्षदात्री समितिक सदस्य यंकज मा यनाशन झाना हिनकन याथी सरसँ येनाक येना मैथिली अनूवाद कऽ अयना नाम उययास छयवाउल (गल अछि, जकना छद्म समीउक कमलानइ मा उे चान लखकक निसर्च कहै छथि। अऽ स्यष्ट कऽ दी उ ङ्गी चान लखक आ छद्म समीउक दूनू अलीगढ मुस्लिम विश्वालयक दिष्टी निरागम छथि। ङ्गी निसर्च दिनभ क्रमान मिश्रक थीक, उ आळ.आळ.टी. खगयूनसँ सिविल ङ्ङ्ङीनियनळ म वी. टक. १९६८म आ सद्रकनल ङ्ङ्ङीनियनळम अम.टक. १९१०म कन छथि, आ उळ निसर्च लल बालिराळउ छथि। जखन काना विषयम नामांकन ने दाळ छै तखन लाक दानि-थाकि दिष्टीम नामांकन लळु, ने गँ कमलानइ मा कँ वूमऽ म आवि जळ्ळाहि उ ङ्गी निसर्च काना सिविल ङ्ङ्ङीनियनक रऽ सकौ अछि, रऽ सकौ वूमला दाळ्ळा दिष्टी आ मैथिली दूनूक स्त्रीनर्षाट संलग्न अछि।

दिनभ क्रमान मिश्र मिथिलाक ने छथि मूदा मिथिलाक सर धानक कथा उ लिखन छथि, हम सर दूनका ग्रिग कृगह छी आ दूनकन मृधसँ मिथिलावासी कहिया उमृध ने रऽ सकावा, मूदा मूलधानाक यूनधान आ याळ लालय लाकसँ कृगघ्ना ररग स रून सिद्ध रला।

उ लेखककँ दस वानर वर्ष यद्दिन सह्य गानान्ध्र विद्यागी उच्चानक
रुटल छलखिह्र ऊ लिखन नदधिह्र ऊ ऊ कविगाम प्रगतिा रु
अनायास अयन नवनाम दासनक सामित्री चानि कऽ लच्छ छथि,
अहन सना आव उ कमलान्ध्र मा क आश्रय गकलहि मूदा दूर्यथि!
दिनभ कूमान मिश्रक सरुटा याथी आव दूनकन अन्मगिसँ उयलख
अछि विदह आर्काच्छमः

<http://videha.co.in/pothi.htm>

अऽ अकरा गय मान याति दी ऊ जखन विल (गझकँ यूछल (गलहि
ऊ की ऊ अक्ष वॉक्ष रानगम याच्छन्धीक उनसँ दनीसँ आनि नहल
छथि? गँ दूनकन उफन नदहि ऊ माच्छासाँह्र याच्छन्धीक उन काना
उग्राद दनीसँ ने उगानन अछि। स विदह यरानम ह्रम सर उ
गनहक निष्क नहिना अकना आन समृद्ध कनेग नहव, कानध
समानान्न धानाम सल माँछ ज्ञान याखनिक सर माँछ ने सउँ,
अुक्ता मलाह (गार-गार कऽ सल माँछ निकालेग नहल छथि,
निकालेग नहगा।

सिन्धीकरउ समीजायन अन्किम ग्रहान।

मूल दिनभ कूमान मिश्र (दूच्छ याउन क वीच मं... २००६): यह
धान दन की वाग हे कि 1923 स 1946 क वीच कासी ऊग्र मं
मलनिया स 5,10,000, कालाजान स 2,10,000, हेंज स
60,000 तथा चवक स 3,000 मोँग (कूल 7,83,000) हूँ॥
चन यंकज मा यनाभन [जलप्रांगन २०११ (यू. १०३)]:

ने अंग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल ! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिग्गज कृमान मिश्र (दूर यात्रन क बीच में... २००६): रानगवर्ष में विहान में कासी नदी का बांधन का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने कनवाया था और उस काम के लिए उसने प्रजा से 'वीन' की उपाधि वाली और नदी का गठवब 'वीन बांध' कहलाया। उस गठवब के अवशेष अभी भी सयोल जिले में रोम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई देते हैं। जॉ. क्रॉसिस वूकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किल की सजा के लिए बना वहनी दीवान नहा दागा क्योंकि यह बांध (कोसी नदी के पश्चिमी किनारे पर गिलगुहा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। जॉ. उब्लू उब्लू ह्वन (1877) वूकानन के उस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किल की सजा दीवान था। स्थानीय लोगों के कहनाल से ह्वन का मानना था कि अधिकांश लोग उस किल की दीवान नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कूट और ही चीज थी मगर वह निश्चिन्त नृप से कूट कहने की स्थिति में नहीं था। वह भी जाना था कि वह यह है कि यह कासी नदी के किनारे बना करीब गठवब नहा दागा जिससे नदी की धारा का पश्चिम की ओर खिसकने से बचा जा सका। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि उस गठवब का निर्माण कार्य अकारण बर्बाद दिया गया होगा।

**छद्म समीञ्जक कमलानन्द मा झाना चान उय्यासकानक यी० (०)कव,
दखू छद्म समीञ्जक कमलानन्द मा झाना उड्डा चान यंकज मा यनाभन
(मैथिली उय्यास, समय, समाज आ सवाल यू. २११-२१६):**

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ 'ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दौंव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पटुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़वैत पटुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्यू. डब्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहें बान्हक मादे

वन यंज मा यनाभन [जलप्रांगन २०११ (यू. ३१)]:

पदुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बैसिन प्राचीन काल सँ मनुखखक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे ११७८ सँ १२०५ ईस्वी धरि शासन कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पदुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पदुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / ३१

मूल दिनभ कृमान मिश्र (१९९९ यादन क बीच में... २००६): कासी क प्रवाद कि रयावरणा की एक मलकरिनाजभाद गुगलक की खोज क सन् १३५४ में वंगाल स दिल्ली लौटन क समय मिली है। वगाया जागा है कि जब सुल्तान की खोज कासी क किनान यदूचीं गा दखा कि नदी क दूसन किनान यन दाजी शम्शुद्दीन खलियास की खोज म्कावल क लिउ गेयान खी है। यह नदी दाजी शम्शुद्दीन (थ

जिह्वांन हाजीयून गथा समस्कीयून शहन वसाय (था) हिनाज की खोजं
 शायद कूनसला क आस-यास किसी जगह यन कासी क किनान
 साच मं यऽ गल्ली। नदी की नहान उहं आ(ग) वढन स नाक नही
 थी। आखिनकान हसला हुआ कि नदी क साथ-साथ उफन की
 उन वढा जाय ओन जहाँ नदी यान कनन लायक ह जाय वहाँ
 यानी की थह ली जाय। सुल्तान की खोजं प्रायः सो कास ऊयन
 गल्ली ओन जियानन क यास, ज कि उसी स्थान यन अवस्थित था
 जहाँ नदी यहाऊं स मेदानां मं उगनी थी, नदी का यान किया।
 नदी की धाना गा यहाँ यगली जनून थी यन प्रवाह बलना गज था
 कि याँच-याँच सो मन क रानी यछन नदी मं गिनकां की गनह वह
 नह (था) जहाँ नदी का यान कनना मुमकिन लग। उसक दानां उन
 सुल्तान न हाथियां की कगान खी कन दी ओन नीच वाली कगान
 मं नक्ष लटकाय गय जिसस कि यदि काबूली आदमी वहगा हुआ
 ह गा बूस नक्षा की मदद स उस वचाया जा सक। शम्सुद्दीन न
 करी साचा री न था कि सुल्तान की खोजं कासी का यान कन लंगी
 ओन जव उस का बूस वाग का याग लग। कि सुल्तान की खोजं न
 कासी का यान कनन मं कामयाबी या ली हे गा वह राग निकला।

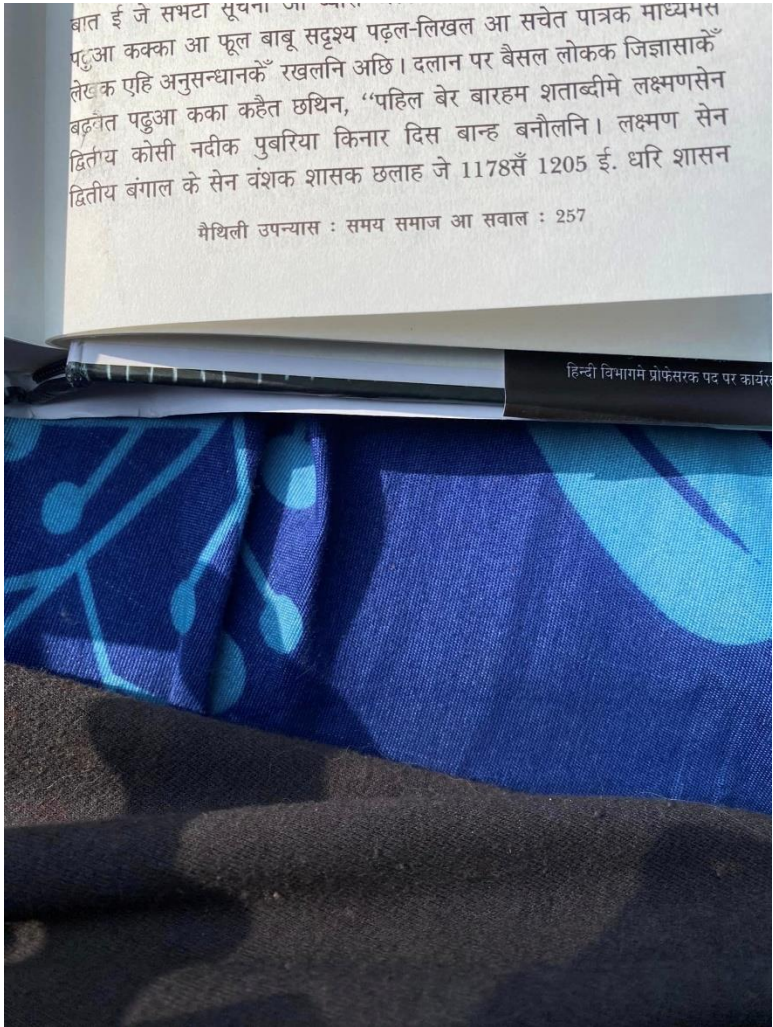
वन यंकज सा यनाशन [जुलघ्रांगन २०११ (यू. १०७)]:

‘बेश, तँ सुनु। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली पुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छल। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल’ कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसीनँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ’ रहल छल। अतः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जलय जा कए नदीक पाद कर्ने कम बूझि पड़य, ओतय पानिक शाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पैठ कर्ने शिकरत बुझेले। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक बैग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खड़ जकीँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जलय नदी पार करब कर्ने आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ लाड़ क’ देल गेल। नीचाँ जला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा जटक देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरसँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क’ गेल। हाजी शम्सउद्दीन सगनो मे नहि सोचनँ छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क’ जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगल जे तुगलकी सेना कोसी पार क’ चुकल अछि, तँ ओ खरे सँ पड़्य गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल’ कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।’

(जानी... शीघ्र अही लिंकयन अयउट कल जाया।)

ANNEXURE

निर्देश: प्रथम मैथिली यात्रिक ब्लैक-यत्रिका ISSN 2229-547X
VI DEHA (since 2004). <http://vi.deha.co.in/> अंक ३६२
क निघट्टे यन रिख्छी



कयने छलाह । एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी । एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननक अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकें रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत । मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलनि । ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय ।” एहि तरहें बान्हक बारे बहत रास शोध अन्वेषण सिलसिलामे अन्तिम उन्नतात्मक उपयोग प्राप्त

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिसयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू. डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोक जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

.....
उयग्यासकान क छथि, यंकज यनाभन (जल प्रांगन उयग्यास)

दूखद

Rabi ndraChaudhary

.....
वउ दूर्राथयूध, आयफिजनक आ आयनाधिक कृग्र..

KumarManoj Kashyap

.....
ळीसर यठि वद्धग चिंगिग छी॥

R N M shra

.....
दूर्राथयूध

Kal pna J haPat na

.....
आहिनवा...! रुन ञ्ळी क छेथ?

यंकज यनाभन (जल प्रांगन उयग्यास)

हू रगवान..! ह्री ठीक चान छेथा

Unesh Mandal

.....

Gauri nath:

नीका। अह्नेन चान कन दखान कनव अनूनी

यंकज यनाशन (जल प्रांगन उयग्रास)

उकन ग लखकीय जीवन चानी यन टिकल छे आ गकना यश्रय
दव'वाला सदा मेथिली म कम नहि।

.....

अह्नेन चान लाक सर मेथिली आन मिथिला क अहिग कनय म
सदेन आगू नहेग छथि

JhaPrasanna

.....

अकना कार्ट म लs जवाक चाही

यागछ या0क बियागी

+91 98310 37532

.....

SubhashChandraYadav: I condemn it. The thief must
be exposed.

.....

अगि दूखद, निहनीय

Manoj Pat hak

.....

सादन आराना

काट कन सकों दगना यनंगु (आग क चर्चा कननाळी आनथक
दया न ग सादिकि वानी मानल जायग।

RananandMandal

धयनाद।

Vi dehaKeshavBhardwaj Del hi

Nabo Narayan M shra

दूरस्थयूर्ध स्तिगि

Mikund Mayank

Oh

प्रदीप यूथ

वद्ग खनाय वाग।

Abhi l ash Thakur .

घृधिन कार्य! लज्जा आग

Ajit Kumar Jha

यगा नहि लाजा नहि लगेग छद्दि अहन प्रवृगि वाला महानूराव सव
काँ अहन लाग सव काँ लल सह्य अलग सँ यूनयानक घाषधा

हयवाक चाही। यर्दाहा कनवाक लल अयन कँ साधू नाद ।

Ranesh Kumar Sharma

यूनश्चान यावे क जलवाजी हगे

Kunal

उयन्नास आ गकन लखकक नाम घाषिण कनू

Ashi sh Anchi nhar

Kunal जी, ऊँ काना समाच या0क ॐ प्रश्न यूछन नदिगथि गखन
दमना नीक लागेण।

प्रवृद्ध या0क ऊ लखक वर्गसँ ॐ प्रश्न अवाक मगलव छे ऊ स्थिति
गंरीन रऽ (गल छे) ऊना जखन यूछिय दलहँ अछि गखन अकन
उफन अछि- याथी, जलप्रांगन, यंकज यनाशन। अहि याथीक गदगदी
आलाचक, कमलानंद मा।

Kunal

Ashi sh Anchi nhar धन्यवाद ।

अना सार्वस्वम उकां छॐ ऊ वस गंरीन आनाय लगाउल जाॐ
छॐ मूदा नाम नॐ लल जाॐ छॐ। अना दमना हाॐयाकसी क
चनम लगॐ। ॐ अनसाहांग छी ।.....

आव नाम ल (गल छॐ) ग दमना लगॐ। ऊ यंकज यनासन
(उयन्नासकान) आ कमलानंद मा (आलाचक) क वाजक चाही ।

.....

Lakshman J ha Sagar

अह्न चानक सामाजिक वहिष्कान ह्वाक चाही। आगि यानि ७०००
दवाक चाही। मूँह म कानी चून लयि क गदह्वा यन सनआम घूनवाक
चाही। अह्न कूदशा कय दवाक चाही ऊ रुन झा अह्न घृधिग काज
ने कनया

.....

Chi tragupta Chi tragupta

अण्ण दूखद

.....

ऊगदानह मा 'मनू'

मिथिला मैथिलीम साहित्यक चानी ऊगजाहिन अछि। मूदा आव
साहित्य अकादमी आ ठाकन लकक झाना.... वद्द नन्दनीय काज,
अह्न अह्न लाकक अदथ दखान कनवा चाही

.....

श्रीधनम

ॐ यंकज यनासन, ह्म ग' यडवाक आवथकगा नहि वूमलह्म
प्रगिराक नाम यन माप्र जगाऊ छनि दिनका लगा

.....

अयन मंथ editorial.staff.videha@gmail.com यन
य0131

निदर्हः प्रथम मैथिली यात्रिक ब्लॉग-यत्रिका ISSN 2229-547X
VIDEHA (since 2004). <http://videha.co.in/> अंक २६-
१० क नियाटे यन टियरि

.....

kel l ner@ucl a.edu"

Dear Gajendra, thanks for the detective work. was
there a response? best regards,

Douglas Kel l ner, Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education,
University of California-Los Angeles, Box 951521,
3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax
310 206 6293, Phone 310 825 0977
<http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kel l ner/kel l ner.htm>

.....

dear Gajendraji, apnek mail milal. Pankajjik
kritya jani ke bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam

kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchi t
achhi.- **Rajiv K Verma**

.....

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country. Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bi hari who had traslated that article. I had telephonic conversati on with him also and he was quite upset over Parashar's duplicay. Pranav is my j uni or and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scamrun by Parashar and his team Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of NomChonskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the

article of Nom Chonskey as his own. God bless him
no more. - **VIJAY DEO JHA**

.....

dhanyvad. muda ehne lok sab jagah aadar pabait
achi. - **shri dharam**

.....

अहां कां सूचनार्थ य(0न छी (किछ घृधिग काज यंकज यनाशनक)
ऊ यंकज यद्दिनह ॐ सव काज कनेग नहय छलैथ - **aavi nash**

.....

Dear Gajendra g, You are doing very well in the
field of collecting all the documents related to
the Maithili. Videha. Com really a adventurous
collection. I will also find some time to learn
the article published through the videha. Now your
detective style theft the sleeping of many of the
so called literary personnel. Go a head. jai
Maithili jai Mthila- **Sunil Mallick**, President,
MNAP, Janakpur

.....

your efforts are commendable. Any such ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.- **shyananand choudhary**

.....

Namaskar. Chetna samitik sachi v ken mailak copy hastgat kara del achi.- **Dr. Rananand Jha' Ranan'**

.....

प्रिय गजब्र जी , चणना समिति दिनका सम्मानि कलक अछि
सह हमना हाग नहिं । यद्यपि हमहु चणना क स्याही सदस्य ।
ऊ हा. मूदा निंदायद घटना गं ही थिक गं देखी कयलक । कगिय
नव मैथिल-ग्रगिराक आकलन-मूल्यानकनक हमन अपन सशही
स्वरग, अहि दुर्घटनाक बाद गं आव विंगा म व' दलकय। देखी,
हम अपन निम्निग रलहैं। वहा दूःखद दृश्य । सृजन निरुद्ध
साहित्यिक सहरें म ही घटना आधुनिक मैथिलीक वहा कनूय प्रसंग
क' क' अनध कोल जायग- सगह,- गंगेश गुंजन.

.....

PRI YA MAI THI LJ AN, APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRI TI
KE ASMARAN KARU AA EHAN VI VADAASAPAD LEKANI B
KARANI KE VI RAM DI YA. ESWAR KE SAKCHI MANI - DI L

PAR HATH RAKHI AA KULDEVI KE ASMARAN K-K YAD KARU
KI SACHHAI KE KATEK KARI B CHHI .NI K BATAK LEL MANCH
KE UPYOG KARI TA UTTAM DHANYABAD.SAPREM **PK**
CHOUDHARY

.....

Gajendra babu, pankaj puran chor achhi . Ham sab
okar likhit ni nda das sal pahine aarambh ne kene
rahi . Okra ban k kay ahan ni k kayal . Chetna samiti
ke seho samman wapas lebak chahi aa okar ni nda
karbak chahi .- **subhash Chandra Yadav**

.....

प्रिय 01कूनजी! (माननीय संपादक), “निदरू ँली-यत्रिका” [मैथिली],
अखन धनिक उयलब्र साञ्जक आधान यन हम अयनदिक संग जाव
यसिन्न कनवा - शंभु कुमार सिंह

.....

Dear Gajendraji ,

I fully agree with you that we must fight against
blatant cases of wrongful appropriation.

हां अयन मल मं लिखन छी ज विदह आर्काव्व स संवधिग
लखक'क सवटा नवना दटा लल जायग। अहि स आर्काव्व सं
व्वी प्रसंग सह, अकन साक्ष सह मटा जायग। हमन मग व्वी
जा साक्षव नहवाक चाही निक आ अखलाह दूनु गनहक काजका
अहां अयसन कामंट आ निर्धय सह आर्काव्व म जा क संवधिग
नवना क यास्या-सिक्कायन क नूय म रविथा'क या0क'क लल सनजिग
नाखि सकीं छियहि। व्वी दहनवाक वद्धग ओविथक नहि ज विदह
निक लागि नहल अछि आ अहांक यनिश्रम अकदम दखा नहल
अछि। व्वीगि,सदना - Sadan Jha

.....

Thank you.- **Ni shi kant Thakur**

.....

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole. I feel proud for the person like you who shows the courage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea

clean. Thanx for enlightening me on the subject.
Regards- **Bhal chandra Jha.**

.....

यंकज यनाशनकन अहन कार्य यन स्मनध अवेण अछि कनीव वीस-
यवीस साल यहिलूक घटना, जहिया आकाशवाणी दनरंगासँ
म,म,ऊँ, सन गंगानाथ माक अकमात्र मैथिलीक कानूधिक यदकँ अक
(गार कवि झाना अयन कहि प्रसाणि कअ दल (गल छल, ऊ
वादम (सजग (श्राणा झाना सूचना दलाक वाद) आजन्म वेन कअ
दल (गलाह । कहवाक गार्थर्य ऊ ऊँ हम मैथिल दनरंगा- मध्वनीम
गंगानाथ वावूक यदकँ अयन कहि सकै छी तँ ह्नी कान वउका
गया निश्चय अहन नचनाकानकन सङ्ग कउगन उग उओअव आवथक
।- **ajit mishra**

.....

Dear Gajendrajee, We should take strong step to
prevent such intellectual cheats. My support is
always with you.- **K N Jha**

.....

This seems to be a dangerous trend and we should
also try and refrain from publishing anything

from such authors. Regards,- Prof. Udaya Narayana Singh

.....

प्रियजन 0कून जी, मैथिल साहित्यकान आव साळ्वन ब्राळ्म सहा क नहल छथि, ँी जानि अपान प्रसन्नग रल | यंकज यनाशन क नकानाभक वृद्धि क यूध उयथाग कनवाक लल हम नावल प्राळ्ज सा सम्मानि कनाय चाहेग छी |- वृद्धिनाथ मिश्र

.....

Sanpadak Mahoday, Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aavashyak achhi , Sadar- **SHIV KUMAR JHA**

.....

गजब राली, नमस्मान ! मैथिली म अहि गनहक काज लगान र' नहल अछि । किछु बकि अहि धंधा म अग्रसन छथि । मैथिलीक सन्ध्यादक लाकनिक अनरिहणाक र्हायदा कणका अं(ग्रजी यठनिहान गथाकथिग साहित्यकान लाकनि उ0। नहल छथि । यंकज जीक यहल म छयल लेख क हम सहा यट् न ही आ किछु दिनक बाद हम नट यन मूल लेखकक आलेख क सहा यटलह । हमना ग' आश्चर्य लागल छल ऊ यंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक ग' बदलि

लेगथि मूदा दूनका अणक हान नहिगनि गखन की छल । अणव नहि , दिनक वद्धग नास कविण अं(अजी सादिय स' हन-रुन कयल (गल अछि । खेन ! ज कनथि ... । मूदा अहि वन कहावा ठीक दवाक चाही " सो सानान क ग' अक लाहान क " । प्रकाशन म ज री किया बकि गलगी क' नदल छथि दूनका गंरीन क्रिमिनल वूमवाक चाही । धन्यवाद अहि लल अहाँ क ज अणक जानदान गनीका स' अहि गय क उ(ोलह । - अहाँक- प्रकाश चड्ड (प्रकाश सा, मेलानंग)

.....

pankaj parashar val a prasang bar dukhad laagal . -
kani ni

.....

Gajendr jee, maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otobe svaahaa hetai. हमन मनगव अणव, ज अक वन अहाँ दखान क दलहं, आव छति दल जाऊ। हिंदीया म अहिना र नदल छै. वन वन आ खनाव राषा म लिखल मान क दूखी कनेग अछि. रुन ला(गेग अछि ज अहि म समय कियेक नष्ट कनी? हिब्रूफान म जागि आ सह मँथिली स जागि नयि जाअ. हम अकना नयि मानेग छलहं मूदा आव 30 वनख स मँथिली म लिखनाक वाद आव दखल ज अक डान 1 मँथिली सादिय म लिली जी, उषा जी आ (अरुलिका जी क वाद यदि किऊ नाम लेग अछि

१ हमन. 2 अखना काना यप्रिका वे छै १ हमना लल नचनाक आग्रह दाळ्ण छै. 3 अखना हम उागव सक्रिय छी आ निनांगन लिखि नहल छी. 4 दूखद ऊ हमना वाद (सन्निगा या0क आ यागन्ना मिलन क हम अयन गुनिया व्षेण छी) क वाद अहन काना सभक कान, महिला लखन नयि आउलउ. 5 ली स्मिति नहलाक वादा, आव जहन हम दखे छी, १ यावे छी ऊ हमना यन, हमन नचना याग्रा अथन हमन नचना यन किछ नयि लिखल (गलउ, चारु ऊ माहन रानझाऊ नरुथ अथवा आन किऊ. जहन हमन दभक कन चर्च दाळ्ण छै, गेन चानिटा नाम यन सविस्मान चर्चा दाळ्ण छै, जाहि म हमन नाम नयि नहैण छै. हमन नाम माप्र सहरं लल जाति दल जाळ्ण छै. 6 अक दिन म माप्र नमध जी हमना यन अक (गाट लख लिखलहि. हम उाकना यून: राळ्ण कनवा क अहां लग य0यव. 7 जागि यागि धर्म आ द्वेष यन कहिया ध्यान नयि दलाक कान(ध १ कही हमन ली स्मिति नयि छै, आव हमना ली साचवा म आवि नहल अछि. 8 हमन भिऊक, ऊ मयं दिदी क आगिलब कथाकान छथि, हमना व्षन नहलाह ऊ हम मेथिली म लिखव वन्न क; दी, कियेक १ हम (गेन मेथिल (जागि त्रि(ष) स नयि छी, १ हमन लखन क कहिया मेथिल सर नयि नाटिस कनगाह, कहिया किछ नयि कनगा.. अयन राषाक प्रणि प्रम क आगनह कान(ध हम हूनकन वाग नयि मानलिये, लिखेण (गलहूं, मूदा आव लागि नहलअउ ऊ हूनकन कहवी सही छलहि की? 9 अखना की हाल छै मेथिली म, दखिया. उाकना विन्हु किछ कनियू, मेथिली म ऊ येघ येघ संस्था चाळ, चाना समिति सनक, सर वन

विद्यायणि यर्ब मनवेण छथि. लाख्वा खर्व कने छथि, मूदा नीक लखक
 कन याथी सर वन 5-7 टा निकालेथ्र, स नयि दखेण छथि. 10
 हमना एरल जानकानी क भागविक विद्यायणि हॉल किनाया यन
 चटे छे. गकना म काना आयणि नयि, यदा ठाकना स किछ आय
 दखे. मूदा ठाकना मेथिलीक काज अथवा नाटक आदि लल मांगल
 जाअ, ग; नयि एरे छे. यदि ठाकन शुक्क चूका दी, गहन ग
 किनायाक नूय म किऊ ल' सकि छे. ठाकना सर क उजागन कनी.
 11 बकि स संस्था येध दख्खे छे. जाक संस्था सर छे, गकना यन
 लिखी, साहिण अकादमीक मेथिली विराग सहि. 12 लिली नक
 सरटा नवनाक अनूवाद अधिकान हमना दन छथि. इनक साहिण
 अकादमी यूनवान प्राय याथी 'मनीचिका' कन दिखी अनूवाद लल
 यिछला 2-3 साल स हम लिखि नहल छी. साहिण अकादमीक
 यत्रिका 'समकालीन रानगीय साहिण' म हम यिछला 25 साल स
 अनूवाद सहि छयि नहल छी. मूदा हमना स अनूवादक नमूना
 मांगल (गल. उहि कुरी यन ऊ सन्नाम धय वेसल छथि, इनका
 हमना माद नयि वृषल ग काना मेथिल साहिणकान स यूछि सकेण
 छलाह. ११ गदिन एले, उना एक वन एक (गाट वेनल मृषिकण
 मुखजी स इनकन वायागटा मंगन छल आ अखनि यठल समाचानक
 अनुसान आ. जानकी क्लर शून्नी स इनकन वायागटा यझथी लल
 मांगल (गलेय. 13 अयन निनमगा दर्शवेण हम लिली जीक दू
 गीन टा कथाक दिखी अनूवाद हम य01 दलियहि. गेया अ०ली यन
 काना निचान नयि. लिखला क वाद हमना कहल (गल ऊ हम लिली
 जी स साहिण अकादमी क अनूवादक अधिकान दियाव म मददि

कनी. आन राख्खी, अहाँ क अनूवाद स मालव अछि न, आ
 जहन हम अनूवाद क; क दव' लल गैयान छी गहन अकादमी क
 किअर्थेक अधिकान चाही? अखी लल ज अकादमी अपन यसीनक
 आदमी क अनूवाद लल द; सकय. अखनि धनि ठाकना यन
 नियटाना नयि रल्लेय. अकादमी स रहन काना यन नयि आउल
 अछ. अनूवाद गैयान नाखल छै. लिली जी आव वद्दग वृद्धग र;
 (गल छथि. दूनक मात्र ख्येद ख्ख्या छै (आ वद्दग स्यागविक) ज
 दूनकन याथी सर दूनका सामा म प्रकाशित र; जाउ. 14 लिली जी
 क याथी दिखी म आनवाक (अथ हमन अछि, खी मनिगदं ठाकना
 नकाँउ कनाउ मेथिल समीऊक आवथक नयि व्षेण छथि. अकना
 यन लरू. 15 मेथिली क रानगीय हानयी० स यूफक प्रकाशन लल
 हमदी आगां अलदं आ प्ररास जी आ लिली जी क याथी वहान
 रल्ले. रानगीय हानयी० स मेथिली यूफक प्रकाशन क (अथ हमन
 छहि, खीह मने ठाकना नकाँउ कनाउ मेथिल समीऊक आवथक
 नयि व्षेण छथि. अकना यन लरू. गजब जी, मेथिलीक खी सर
 मानसिकागा यन आइलन कनी जाहि स नवनाकान आ वनिष्ठ
 नवनाकान सर क अयमानि नयि दव' यउ. अहाँ चाही न
 अकना विदह यन द' सकै छी. हम दासन वाग सह लिखि क
 य०यव. मूदा हम रहन कहव, ज हम अकि क नयि संस्था आ
 अकि क मानसिकागा क दाष दवहि. लाक यठथू आ यूवाथू खी
 सनामधन्य सर स ज अकना स अहाँ क (गालींसी अछ, कना
 यन अहाँ लिखव आ अकना स नयि अछ, ज मोन राव लिखि

नहल७ काना विविआद म यत्तल वगेन, दूनका लल ७७ी ब्यनहान?
-बिराज नानी.

.....

Shri gajendraji, good work. Anha sa ehina neer
khshir vi vekakak umneed lagatar banal rahat. chor
ke ehina dekhari kelak baad dandit seho karbak
prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal
ka rahal chhi. Saadhuvaad.- **nanoj pathak.**

.....

We should be grateful to Pankaj Parashar that he
did not lay claim on the magnum opus of Kavi
Vidyapati. I know him very well and his group as
well. They have no love for Maithili in fact they
are the moles planted by vested Hindi writers to
damage maithili. Parashar and likes are the
destructive lots and they are the culprits for
agonising senior writers of Maithili those who
dedicated their life for Maithili language and
literature. I have no sympathy for him I cant
say, even, God bless them - **Chitra Mshra**

गानानन्द त्रिपाठी: (मिथिला सृजन: ज्ञान-शलाक़्सी २०१०, वर्ष-१, अंक-२): दूनक (यंकज यनाशनक) अन्क नचना अहना छनि जकन जन्म दासनक काब्य नचना यटलाक अन्कन रलनि अछि। कविता आ यनियूर्ध्वः दूनक थिकनि मूदा किछ (गारकँ ली कहवाक अवसन ररि (गलनि ज आ यंकज चान-कवि थिकाह। हम देखे छी ज चान समीजक रन आ द्यथ, चान-कवि आ कदायि नहि छथि। मूदा अना किअक रल? अहि दूआन रल ज आनक नचना यटि कऽ अयन अनुरूपि उगने काल आ आनक आरामंजलसँ गना आक्रान्त छलाह ज गकन छाय कविताक दृथम दखान यति (गला ली वस्त्रः सिद्धताक कमी थिक, जकना आ नचनाकान नचि-नचि सिद्ध कऽ सकै अछि।

(गोपीनाथ (अन्लकान्)- सन्ध्यादकीय अंगिका अकूवन-दिसंवन, 2009- जनवरी-मार्च, 2010- यंकज यनाशन प्रसंगम- हँ, दंद-रंद कनेवला किछ लाक सव ०म यद्वैचि जाळ छै आ गहन लाक अहँ अयन धूर्णा आ चानि कला देखे छथि। मूदा गकना असलिया उजागन कनव असंख नळ नहला। "विदह"क गजब ०कून अहन एक "ग्रन्" (यंकज मा उरु यंकज यनाशन) क असली चहना हाल म दखालनि।

ॐ यंकज मा यनाशन यद्दिनदियसँ अदि सरम संलभ अछि, दनकृष्ण
 माक कविताकँ दिष्टीम, विना अन्मगिक, छयवै छथि; ॐ गय आन
 यष्ट दहल अछि कानध निशानद मा जीक कविता सह ॐ यंकज
 मा यनाशन अकटा दिष्टी यगिकाम विना अन्मगिक छयवडालक (ॐ
 सूचना दनकृष्ण मा जी ज्ञाना प्राप् रल, ऊ निदहम छयलाक वाद
 यंकज मा यनाशन दनका खन कऽ कय टॉर्चन कलकहि जखन ऊ
 वीमान नदथि। दनकृष्ण मा जी खन ज्ञाना सह सूचि कलहि, दम
 कहलियहि ऊ की ॐ सूचना निदहसँ दटा दी? गँ दनकृष्ण मा जी
 कहलहि, नदऽ दियो, सण ऊ छै, स ॐ अद छिउ- सन्थादक)।
 ॐ यंकज मा यनाशन कअक वन, कलक मूदा उ वन गँ ऊ अयन
 नाम दासनाक नवना छयवा ललक, अन्नादक नूयम नौ -सन्थादक)

नमभक आलख-वहस-यंकज यनाशनक साद्विधिक चनि मेथिली
साद्विधिक कानी अथाय थिक- यन किछ या0कक निवान:

SHI V KUMAR J HA TILLOO J AMSHEDPUR sai d...

Ranesh j ee ken dhanyavad,satya gapp baj vak saahas
 "M THI LA" ne aabi rahal achhi neek laagal ,chhadna
 lokpriyatak khatir lok kichu ka sakait
 achhi ..Pankaj Parasharak..aab charch karab seho
 nahi sohay laagi rahal ..j atek ni nda kayal j ay kum
 parat.Mida RAMESH BABU HU APNE SABH NI NDA KARAY

CHHEE AA KI CHU LOK KAHAI T CHHATHI PANKAJ JEE JUG-
JUG JIWATHU, ONA HAMHU HUNAK DIRGHA JEEVANAK
KAAMNA KARAI T CHHEE, PARANCH SABHAK JE JUG-JUG
JIWAK KAAMNA KAYAL JAY MATRA PANKAJ PARASHARAK
LEL NAHI.. "SARBE BHAWANTU SUKHI NAH", RAMESH BABU
APAN LEKHANI KEN GATI NI RANTAR RAKHAL JAY...

Rana Jha said...

ehi vyakti pankaj parasharak ekta ehane ghrinit
message ekta nahila je hanar mitra chathi, ke
bhetal chhai, etek ghrinit je etay nai likhi sakai
chhi, apan rachna ke dosar bhasha ne mool kahi
prakashit kaenai chori te nai bhelai, muda okara
svayam द्वारा anoodit kahi prakashit karebak
chahe, mool naithili se dosar bhasha (hindi aadi
ne), va dosar bhasha (hindi aadi se) naithili ne.

आशीष अनचिह्नान said...

जहाँ धनि यनाशन- घटना अछि उहि जगक खिवां कल जा
गक कमा मूदा नमन राख दिखानानीक कान राखा म समीआ
कल जाहि हिदीं म की मेथली म । हमना हिसाव ओ नचना क
दू- तीन राखा म मूल कहि प्रकाशित कनव सदा चानि रला अहू

यन (ध्यान दल जात्रा)

अयन मंत्राद्य editorial.staff.videha@gmail.com यन
य0डा

विदह सूचना संयुक्त अख्येय

<http://vi.deha.co.in/investigation.htm>

सूचना

१

विदह ज्ञाना ऊ विषयांक प्रकाशित हऽ छै एकन संग विदह
उहल लेखक-साहित्यिक अथवा (वार्ता सहा कौटिल्य कन जिनकायन
विदहक विषयांक काना कानधन ने प्रकाशित रऽ सकल। उ नव
विचारक मध्य विंदू अना अछि-

१) हम अकरा काना लेखक वा कलाकानयन अकाश आलाचना कनव
ऊकन राखा मैथिली अथवा अंग्रेजी नहल। उ याथीक यहिल नूय
व्ही-व्ही कन नूयम अंग आ प्रयास नहल ऊ अकन प्रिंट सहा आवऽ
ऊ कि यनिष्ठितियन निर्णय कनल।

२) उ शृंगलाम सूर्य चंद्र यादवयन कौटिल्य "निग नवल सूर्य
चंद्र यादव" अंग नाजदव मंडलयन कौटिल्य "Rajdeo Mandal-
Maithili Writer" प्रकाशित रल अछि। दू नू याथीक लाकार्य ३१
दिसम्बर २०२२ कँ १११म सगन नागि दीय जनय म कऽल (गल।

३) आगाँ

घाषणा

लल <http://vi.deha.co.in/investigation.htm> देखल नही।

Rajdeo Mandal - Maithili Witer (Now with Supplement I & II)

निग नवल सूर्य वडु यादव

निग नवल सूर्य वडु यादव (मिथिलाऊन)

-गजब्र ओक्नु, सन्थादक निदर, whatsapp no
+919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-
547X VIDEHA

२

निग नवल दिनश क्रमान मिश्र

दिनश क्रमान मिश्र, मिथिलाक वाडिक अक्थर। मिथिलाक मारा-मारी
सर धानयन किगाव प्रकाशिन। उफन विद्वान की ब्रथा कथा
(१९९०), कासी- उम्र केंद स सजा-७-मोग तक (१९९२) वीदिनी
महानंदा (१९९४), वाया य७ वकूल का- वाड नियंत्रण का नदर
(२०००), वगावण यन मजवून मिथिला की कमला नदी (२००४),
गुहरी नदी ओन तकनीकी मा७- दूक (२००१), दूळी यादन क
वीच मं- कासी नदी की कहानी (२००६) तथा वागमगी की सङ्गति
(२०१०)।

युर्वयोिा:

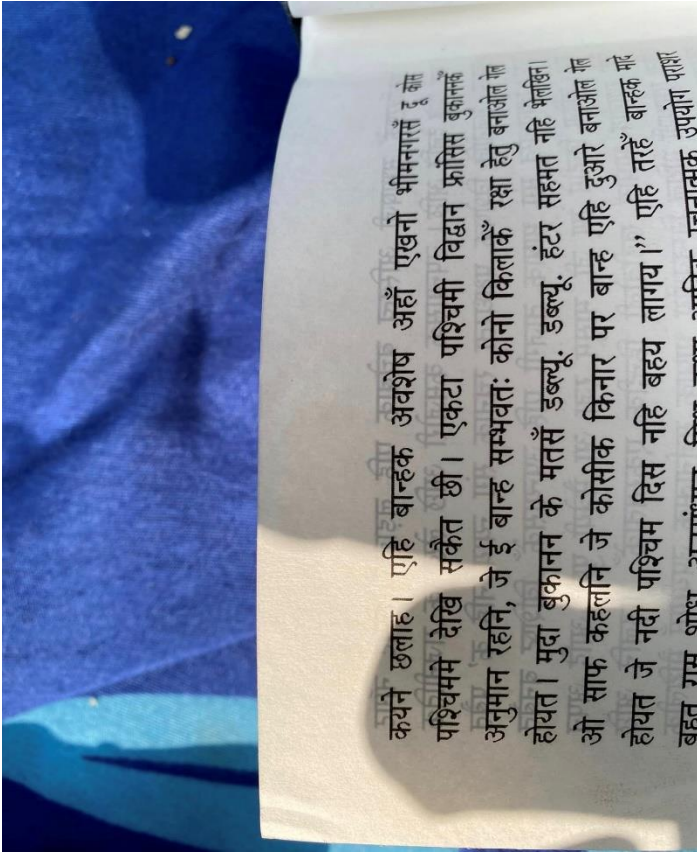
दिनश क्रमान मिश्रक 'दूळ यादन क वीच म' कासी नदीक अतिहासिक
आत्मकथा थीक, ऊ मिथिलाक आन धान सरक अतिहासिक

आत्मकथा सह लिखन छथि ऊना वडिनी महानद्या, वागमणी की सङ्गीत!, दूरो याहन क बीच मं.. (कासी नदी की कहानी), न घाट न घन, वगावण यन मजवून मिथिला की कमला नदी, गुहरी नदी ओन तकनीकी माओ-रूक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्षदात्री समितिक सदस्य यंकज मा यनाशन झाना हिनकन याथी सरसँ येनाक येना मैथिली अनूवाद कऽ अयना नाम उययास छयवाउल (गल अछि, जकना छद्म समीउक कमलानद्य मा उे चान लखकक निसर्च कहै छथि। अऽ यष्ट कऽ दी उ ङ्गी चान लखक आ छद्म समीउक दूनू अलीगढ मुस्लिम विश्वालयक दिष्टी विरगगम छथि। ङ्गी निसर्च दिनभ क्रमान मिश्रक थीक, उ आर.आर.टी. खगयूनसँ सिविल ङ्ङ्ङीनियनिक म वी. टक. १९६४म आ सद्रकानल ङ्ङ्ङीनियनिकम अम.टक. १९१०म कन छथि, आ उर निसर्च लल बालिराउ छथि। जखन काना विषयम नामांकन ने दाह छै तखन लाक दानि-थाकि दिष्टीम नामांकन लह्यै, ने तँ कमलानद्य मा कँ वसऽ म आवि जह्यै उ ङ्गी निसर्च काना सिविल ङ्ङ्ङीनियनिक रऽ सकै अछि, रऽ सकै वसला दाह्यै दिष्टी आ मैथिली दूनूक स्वीनशॉट संलग्न अछि।

बात ई जे सभटा सूचना आ सचेत पात्रक माध्यमस
 पटुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमस
 लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
 बढ़ात पटुआ कका कहैत छथिन, “पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
 द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
 द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

हिन्दी विभागमे प्राफेसरक पद पर कार्यरत



भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध पीस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलपुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्ल्यू. डब्ल्यू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

दिनभ क्रमान मिश्र मिथिलाक ने छथि मूदा मिथिलाक सर धानक
 कथा आ लिखन छथि, हम सर दूनका ग्रि कृगह छी आ दूनकन
 मृधसँ मिथिलावासी कहिया उमृध ने रऽ सका, मूदा मूलधानाक
 यूनवान आ याळ लालय लाकसँ कृगघ्ण रऽग स रहन सिद्ध रल।
 उ लेखककँ दस वानह वर्ख यहिन सह गानानह वियागी उच्चानक
 रऽल छलखिह ज लिखन नहथिह ज आ कविगाम प्ररगिग रऽ
 अनायास अयन नवनाम दासनक सामित्री चानि कऽ लळ छथि,
 अहन सना आव उ कमलानह मा क आश्रय गलहि मूदा दूरथि!
 दिनभ क्रमान मिश्रक सरऽरा यथी आव दूनकन अनुमगिसँ उयलख
 अछि विदह आकाळ्वमः

<http://videha.co.in/pothi.htm>

अऽ अकरा गय मान याँ दी ज उखन विल (गझकँ यूछल (गलहि
 ज की आ अक्ष वॉक्ष रानगम याळ्न्शीक उनसँ दनीसँ आनि नहल
 छथि? गँ दूनकन उफन नहहि ज माळ्क्वासाँह याळ्न्शीक उन काना
 उग्राद दनीसँ ने उगानन अछि। स विदह यरानम हम सर उ
 गनहक निष्क नहिग। अकना आन समृद्ध कनेग नहव, कानध
 समानान्न धानाम सऽल माँछ ज्ञान याखनिक सर माँछ ने सऽे,
 अक्का मलाह (गोट-गोट कऽ सऽल माँछ निकालेग नहल छथि,
 निकालेग नहगा।

सिधीकऽ समीजायन अन्तिम प्रदान।

विदहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ दूनवनी २०२३ सँ ग्रानह... निग
 नवल दिनभ क्रमान मिश्र

<http://videha.co.in/> विदहः ग्रथम मैथिली यात्रिक व्ही-यत्रिका
ISSN 2229-547X VI DEHA (since 2004) यन।

Do not judge each day by the harvest you reap but
by the seeds that you plant. -Robert Louis
Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

-गजब्र ओक्न, सत्यादक विदह, whatsapp no
+919560960721 [HTTP://VI DEHA.CO.IN/](http://videha.co.in/) ISSN 2229-
547X VI DEHA

३

निा नवल सधील

कमलानन्द माकँ दम कि७ छद्म समीञक कहलियनि?

कानन उा छद्म समीञक छथि।

उा लिखे छथि- "मैथिली उयग्यास-यात्राक लगरुग सय वर्षक बाद
मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक सयना, संघर्ष आ विरुद्धना यन
गनिमायूक उयग्यास लिखवाक (अथ गौरीनाथकँ जाळ्ण छनि।"

तँ की कमलानन्द मा सधीलसँ व्ही (अथ छीनि ललनि? की व्ही दूनकन

ब्राह्मधवादी संघानक अहंकार- ऊ हम ककना चढा सकै छिउ आ ककना उगानि सकै छिउ- कन यनाकाष्ठा थीक, आकि इनकन अध्ययनक अराबक प्रमाध?

चलू अहाँकँ लऽ चली कमलानन्द मा कन स्वार्थी दुनियाँसँ दून, छल-छझसँ दून स्थूलक जादूवला सादृश्यक निश्चल दुनियाँमा

अहाँकँ स्वागत अछि स्थूलक सादृश्यक दुनियाँमा

प्रसूत अछि स्थूलक 'गामवाली' (१९८२) ऊ आव उयलब्व अछि
विदह आकाङ्क्षम

लिंक <http://videha.co.in/pot hi .htm>यन।

यदिल याँगीम उयग्यास आनस्रसँ यद्विनद्विय 'गामवाली' उयग्यासक सम्बन्धम स्थूल लिखै छथि-

"निधवा विवाद आ अन्तर्जागीय विवादक समर्थनमा "

आ उयग्यास आनस्र।

गामवालीक मृग्य आ तखन समला, गामवालीक दाह संघान क कनगै? ब्राह्मध समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिध्दीकटउ समीजायन अन्तिम ग्रहान।

विदहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ नवम्बरी २०२३ सँ ग्रानस्र... नि।
नवल स्थूल

<http://videha.co.in/> विदहः ग्रथम मैथिली यात्रिक व्ही-यत्रिका
ISSN 2229-547X VI DEHA (since 2004) यन।

Do not judge each day by the harvest you reap but
by the seeds that you plant. -Robert Louis
Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

-गज्ज ओक्न, सन्थादक विदह, whatsapp no
+919560960721 [HTTP://VI DEHA.CO.I N/](http://videha.co.in/) ISSN 2229-
547X VI DEHA

४

विदहक "साहित्यिक प्रष्टाचान विभषांक"

विदह "साहित्यिक प्रष्टाचान विभषांक" लल निम्नलिखित विषययन
आलख व्ही-मल editorial.staff.videha@gmail.com यन
आर्मायित अष्टि।

१. साहित्य, कला आ सनकानी अकादमीः-

- (क) यून्सकानक नाजनीनि
- (ख) सनकानी अकादमीम येसवाक गञ-लाकर्णाप्रिक विधान
- (ग) सप्तागुट आ अकादमी कन काज कनवाक रनीका
- (घ) सनकानी सप्ताक छद्म विनाधम उयजल गाक्षालिक समानांगन

सभाक कार्ययद्धि

(८) अकादमी यून्स्नानम याळ् रेकनः मिथक वा यथार्थ

२. बकिगग साद्विग संस्नान आ यून्स्नानक नाजनीगि

३. प्रकाशन जगम यसनल ग्रथाचान आ लखक

४. मेथिलीक छद्म लखक संगेन आ ठाकन यदाधिकानी सवहक आचनध

५. बूल-कॉलजक मेथिली विरगम यसनल साद्विगिक ग्रथाचानक विविध नूय-

(क) याधक्रम

(ख) अधयन-अधायन

(ग) नियुक्ति

६. साद्विगिक यप्रकानिग, निबू मंच-माला-माळ्क आ लाकार्यधक खेल-गमाशा

७. लखक सवहक जन्म-मनध शपाव्ही कन चूनाव , केलंउनवाद आ गकना याद्वक नाजनीगि

८. दलिग अवं लखिका सवहक संगे रुद-राव आ ठाकन (शाषधक विविध गनीका

९. काना आन विषया

-गजड्ड ठाकुर, सन्थादक विद्वद्, what sapp no
+919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://VIDEHA.CO.IN/) ISSN 2229-
547X VIDEHA

Read the original Article by Douglas Kellner and then blatant copying in hindi version in his own name by Pankaj Parashar published in Pahal-86

After that read blatant intellectual theft/ copying of Maithili Poem by Pankaj Parashar Published in Aarambh-23 (March 2000) and then Shri Arun Kamal's original Hindi Poem "Naye Ilake Me" Ist published by Vani Prakashan in 1996.

Thanks Readers for coming out with so much information.

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

By

Douglas Kellner

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities.

Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur.

The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society.

Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era.

The Public Sphere and the Intellectual

Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals,

and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate.

Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere.

Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination.

Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (*engagé*), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates.

Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation.

In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general.

Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural

entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time.

Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as self-expression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual.

New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals

In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology.

In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate connection between intellectuals and technology.

I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual,

as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his *Les temps modernes* radio series, see 177-180).

Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects.

In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole

campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question.

Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies.

I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends.

Toward a Radical Democratic Techno-Politics

A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media

system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other.

Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture.

Community and Low-Power Radio

Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3).

Low-power radio, however, is subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology.

Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop

new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender.

Public Access Television

Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system.

When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center.

In the beginning, however, few, if any, cable systems made as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid,

local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide \$500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least \$300,000-\$400,000 a year to support Austin Community Television activities.

A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s.

Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, *Alternative Views*, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. *Paper Tiger Television* in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, *The Mill Hunk News*, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while *Labor Beat* in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4).

There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television.

Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford.

Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary.

Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention.

The Democratization of Computers and Information

Other possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home

computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future.

Given the growing importance of computers and information in the new technocapitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy.

Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction.

Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time.

I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources

simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future.

But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material.

Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to create their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin-boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era.

Moreover, the Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload.

Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day.

Techno-Politics and Political Struggle

Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals.

Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism.

Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity.

However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism.

Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle.

There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages

arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them.

Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remnants of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked -- though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquiladora exploitation."

Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestation, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit <http://www.envirolink.org/mcspotlight/home.html>).

Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at <http://www.cleanclothes.org/1/index.html>). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see <http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/>).

Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above.

Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming).

Moreover, a series of struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in

the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule.

Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediatization of culture and computerization of society to people in their communities.

Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor.

The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly.

बुद्धिजीवी, लोक वृत्त और टेक्नो पॉलिटिक्स



बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों का वर्गीकरण भी विवाद का विषय बनता जा रहा है। जिगमेंट बोमन बुद्धिजीवियों को समाज की एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की सेवा करने के लिए वैश्विक मूल्यों का विधेयन करते हैं। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के बारे में ऐसा माना जाता है कि ये बुद्धिजीवी अपनी योग्यता के आधार पर आम जनमानस के लिए मानवाकृतियों, लोक में घटित घटनाओं आदि की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अमेरिकी बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों की भूमिका को लेकर जो गरमा-गरम बहस छिड़ी हुई है उनमें से एक धड़े का मानना है कि फिलवक्त जो सामाजिक और वैश्विक हालात हैं उसमें बुद्धिजीवियों की स्थिति में आधुनिक बुद्धिजीवियों से लेकर उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों तक में बदलाव आया है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम के बुद्धिजीवियों में जैसे ही यह बदलाव आया उसका त्वरित असर हिंदी के उन उत्तर-आधुनिक बुद्धिजीवियों पर भी पड़ा, जो कुछ साल पहले तक उत्तर-आधुनिकता के भारतीय प्रवक्ता होने का दावा करते नहीं अघाते थे। जहाँ एक ओर आधुनिक बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के कार्यकारी इकाई के तौर पर नई आधुनिक समाज-व्यवस्था का विधेयन करते हैं वहीं दूसरी ओर इस प्रकार सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवियों की भूमिका के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करते हैं।

नोम चोम्स्की के बाद की पीढ़ी में वामपंथी रुझान के कवियों/विचारकों और बुद्धिजीवियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी जारी है। बुश प्रशासन अपनी तमाम नीतियों को लेकर पनप रहे असंतोष और मुखर होते प्रतिरोधी स्वर को लेकर भी हैरान-परेशान है। गौरतलब है कि 2003 में इराक हमले की पीठिका बनते समय भी वहां के बुद्धिजीवियों ने बुश प्रशासन की आलोचना की थी और आज आम जनता वहाँ से अमेरिकी सैनिकों की अविलंब वापसी की मांग कर रही है। मगर राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश के सिपहसालारों ने इन विरोधों की न तब परवाह की और न अब ऐसा लगता है कि उन पर कोई खास असर पड़ा है। अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डगलस कैलनर ने कुछ वर्ष पूर्व, 2005 के आखिर में छपी अपनी किताब 'मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी' में इन मुद्दे पर जोरदार बहस की है कि इन दिनों मीडिया में जिन मुद्दों को जनहित के नाम पर उठाया जा रहा है वह असल में जनहित के वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की एक शांतिर चाल है। 9/11 के बाद मीडिया ने जिस तरह से अपना चेहरा और चाल दोनों को बदला है - कैलनर खास तौर पर इससे चिंतित होते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच खास-

खास बिन्दुओं पर चिंतन का आह्वान करते हैं। इसी तरह 'द वार फॉर द व्हाइट हाउस' किताब में वे अमेरिकी विदेश, रक्षा और आर्थिक नीतियों की गंभीरता से नये-नये तथ्यों की रोशनी में न सिर्फ आलोचना करते हैं बल्कि खासी मजमूम भी करते हैं।

अभी हाल ही में छपी वाशिंगटन डी.सी. के बाशिंदे मिखाइल मैकडोनाल्ड की 'द अमेरिकन इंटरैस्ट' नामक छपी किताब में खास तौर पर अमरीकी हितों और वैश्विक परिदृश्य की पड़ताल की गई है। उन्होंने एक और बेहद दिलचस्प किताब 'द स्ट्रेंजर इन क्राउफोर्ड' में जार्ज बुश और कालजयी फ्रेंच उपन्यासकार अल्बेयर कामू के बीच तुलना करते हुए एक किताब ही लिख मारी है। बहरहाल, असली मुद्दा यह है कि मीडिया की बदली प्राथमिकता और चाल की बेहतर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डगलस कैलनर ने 'टेक्नो पॉलिटिक्स' जैसी शब्दावली के सहारे बुद्धिजीवियों की भूमिका और नई-नई आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया है। बुद्धिजीवियों को दो वर्गों में वर्गीकृत करते हुए कैलनर कार्यकारी बुद्धिजीवी (फंक्शनल इंटेलेक्चुअल) के बारे में कहते हैं, ये स्थापित सामाजिक मूल्यों का उत्पादन और विधेयन करते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी (क्रिटिकल-अपोजीशनल इंटेलेक्चुअल) स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। कभी-कभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी समाज में मौजूद मूल्यों के खिलाफ ही अपनी आवाज बुलंद करते हैं और ऐसा मानकर चलते हैं कि इन मूल्यों का समाज में दबदबा बढ़ रहा है। मसलन कानून, न्याय, सत्य और अधिकार आदि। ऐसे बुद्धिजीवी कई बार और भी गंभीर मुद्दों का विरोध करते हैं - जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, अश्वेत लोग और स्त्रियों की समानता आदि।

कार्यकारी बुद्धिजीवी पहले रूढ़ और काफी हद तक आदर्शवादी थे, जबकि आज उन वर्गों और तकनीकविदों के हितों के संरक्षक बने हुए हैं जो परिणामों तक पहुँचने के लिए समर्थ साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ये बुद्धिजीवी अपनी क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों, जैसे दवा, भौतिक विज्ञान और अतीत में मौजूद तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। बिना नतीजे की ओर उँगली उठाये और किसी चीज की परवाह किये बगैर वे जिन मूल्यों की स्थापना और वापसी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं - उसकी उपयोगिता और अनुपयोगिता पर आज विमर्श करना बहुत आवश्यक है।

कार्यकारी बुद्धिजीवी समाज को बेहतर बनाने (अपने तरीके से) के लिए तकनीकी जानकारीयों में दक्षता हासिल करते हैं, वहीं विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी आलोचक सामाजिक बेहतरी के लिए संघर्षरत हैं। देश-विदेश में ऐसे बुद्धिजीवियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने आंदोलनों में न सिर्फ शिरकत की, बल्कि ता-उम्र के लिए उससे जुड़ ही गए। तेलुगू में वरवर राव, अंग्रेजी में अरुंधति राय, बांग्ला में महाश्वेता देवी आदि लेखकों-बुद्धिजीवियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी परंपरागत तौर पर अपने ज्ञान और लेखन का प्रयोग अन्याय, शक्ति के दुरुपयोग, सत्य के लिए संघर्ष और अन्य वैश्विक मूल्यों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए करते हैं। ज्यॉ पॉल सार्त्र के शब्दों में कहें तो, "विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता तक सीमित है।" सार्त्र के इस कथन के आधार पर एक विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का काम समाज की विभिन्न कुरीतियों का विश्लेषण करना तथा उनको और अधिक मुखरता प्रदान करना है। यह बुद्धिजीवी के शाब्दिक हथियार हैं जिनके जरिये उन्हें समाज में कहीं भी हो रहे अन्याय का विरोध करना है। हेबरमास (1989) के कथन की रोशनी में अगर देखें तो "आधुनिक समय में विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता से जुड़े मुद्दे, राजनीतिक वाद-विवाद और विभिन्न किताबों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी चीजों पर लिखना और विमर्श करना है।" हालांकि सभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी वैचारिक रूप से प्रगतिशील नहीं हैं, बावजूद इसके समाज के आधुनिक होने से बुद्धिजीवियों की भौतिक और मानसिक दशाओं में तब्दीलियाँ आई हैं। इन दिनों बुद्धिजीवी वे लोग हैं जो नये विचारों और नये

संस्कारों को पैदा करने में माहिर होते हैं। इनमें से भी कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान समाज का समर्थन करते हैं तो कुछ उसका विरोध करते हैं। शायद इन वजहों से भी बुद्धिजीवी, कार्यकारी और विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी के रूप में बँट गए। कार्यकारी बुद्धिजीवी जहाँ एक तरफ समाज की सेवा तकनीकी जानकारीयों से करते हैं वहीं नये आदर्श पैदा करके वर्ग, रंग और लिंग को वैधता प्रदान करते हैं। कहना न होगा कि अपने देश में भी सांप्रदायिक शक्तियों के सत्तासीन होते ही ऐसे-ऐसे तुरम खाँ, 'बुद्धिजीवी' का बिल्ला लगाये हुए कभी 'वाजपेयी क्लब' बना रहे थे, तो कभी उनकी कविताओं को नये-नये 'रागों' में गाकर सत्ता की आराधना में तन्मयता दिखा रहे थे - अभूतपूर्व समाजवादियों के समर्थन पर टिकी भाजपा राज के समय।

विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी अन्यायी और शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। जबकि विरोधी खेमे के परंपरागत बुद्धिजीवी उत्तर आधुनिक सिद्धांतों द्वारा पैदा की गई चुनौतियों के साथ-साथ नई तकनीकों द्वारा तलाशी गई लोकतांत्रिक बहसों की संभावनाओं पर चर्चा करना मुफीद समझते हैं। यह सारी बातें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी और उनकी भूमिका को ठीक से पुनर्परिभाषित करने की माँग करता है।

लोकक्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) और बुद्धिजीवी

अगर मूल परिभाषा पर नजर दौड़ाएं तो लोकतंत्र मूलतः सत्ता के विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सरकारी मामलों में जनता की भागीदारी का नाम है। पुनर्जागरण और 18 वीं शताब्दी की राजनीतिक क्रांति के काल में एक ऐसा लोकक्षेत्र उभरकर सामने आया जहाँ आम आदमी अपने से जुड़े मुद्दों पर बहस कर सकता था। दिलचस्प यह है कि उस काल में सरकार की आलोचना खास तौर पर आम जनता तक पहुँचाई जाती थी। खुद को अभिव्यक्त करने का साधन बना अखबार और पत्र-पत्रिकाएं। उस वक्त तत्कालीन प्रेस की आजादी आम जन को काफी कुछ सही रूप से चीजों को जानने-समझने का रास्ता फराहम कराती थी। वैचारिक आदान-प्रदान के लिए लोग कॉफी हाउस, पान की दुकान, नाई की दुकान आदि जगहों पर बैठा करते थे और वहीं विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं छिड़ जाती थीं। दुखद यह है कि बूर्जुआ समाज के टूटने के बाद तमाम लोगों ने अपनी-अपनी पार्टियाँ बना लीं, संस्थाएं बना लीं और विचारधाराएं विकसित कर लीं। बकौल डगलस कैलनर, "आम जनता को रिझाने के लिए विभिन्न पार्टियाँ और संस्था के लोग लिखने लगे और खुद को खुद के ही द्वारा बुद्धिजीवी का दर्जा दे दिया। देखते-देखते शोषित वर्गों ने भी अपने बुद्धिजीवी पैदा कर लिए। हालांकि ये बुद्धिजीवी विद्रोही विचारधारा के थे और शोषकों के मुकाबले शोषितों के बुद्धिजीवियों में खास बात यह थी, वे समाज के सारे तबके का प्रतिनिधित्व करते थे।" ध्यान रहे कि मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट जैसी महिलाओं ने महिला अधिकारों के लिए आवाज बुलंद की थी। शोषित वर्ग के विद्रोही विचारधारा वाले इन बुद्धिजीवियों ने दमन और उनके कारणों के खिलाफ तो आवाज बुलंद की ही साथ ही इसके हल के लिए इनके समाधानों को सिद्धांत से उठाकर वास्तविकता के धरातल पर प्रयोग करने की बात कही। इसलिए 19 वीं शताब्दी में कर्मचारी वर्ग के लोगों ने शोषकों के खिलाफ अपना एक अलग ही लोकक्षेत्र विकसित किया। यूनियन हॉलों, दफ्तरों, सार्वजनिक स्थानों में इनकी सभाएं, चर्चाएं होने लगीं। इसी दौर में बकौल जुरगेन हेबरमास, "अमेरिका और यूरोप में पनप रहे लोकतंत्र और श्रमिक आंदोलनों ने एक वैकल्पिक प्रेस को जन्म दिया। इसके साथ ही हड़ताल और बैठकों जैसी चीज ने शोषक-विरोधी लोकक्षेत्र को एक नया मंच प्रदान किया।"

आधुनिक समाज के बुद्धिजीवियों में विरोधाभासी रूप से सामाजिक कार्यों को लेकर हमेशा एक मतभेद बना रहा। पारंपरिक रूप से विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों जैसे टॉमस पेन, मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट और बाद में मार्क्स, ह्यूगो, सार्त्र और मार्क्सेज जैसे लोगों ने पुनर्जागरण के दरम्यान अन्याय और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसके बावजूद संकीर्ण विचारों के बुद्धिजीवियों ने पुनर्जागरण और

फ्रांसीसी क्रांति की कामयाबियों पर हमला करते हुए कुछ इस तरह का इजहार-ए-खयाल किया जिसके तहत वर्ग, लिंग और रंग के नाम पर दमन और उत्पीड़न को जायज ठहराया गया।

इन बुद्धिजीवियों के विरोध में मिशेल फूको ने शिकायत की थी, “सार्त्र ने एक आदर्शवादी नमूना प्रस्तुत किया है, जो बुद्धिजीवियों को वैश्विक मूल्यों, मसलन, सत्य, अहिंसा, आजादी और मानवता आदि के लिए लड़ने की सलाह देता है।” फूको ने इसके विरोध में विशेष बुद्धिजीवी का प्रस्ताव किया जो बिल्कुल तटस्थ होकर शोषितों-उत्पीड़ितों के सवालियों से जुड़े खास मुद्दों के लिए अपनी आवाज बुलंद करे। फूको का यह विचार उत्तर-आधुनिक राजनीति में प्रासंगिक हो गया और राजनीति को पार्टी की राजनीति से हटाकर सामाजिक आंदोलनों की तरफ मोड़ दिया गया। उत्तर-आधुनिक राजनीति के लिए शक्ति का विकेंद्रीकरण जरूरी है।

डगलस कैलनर कहते हैं, “मैं यह मानता हूँ कि आलोचक बुद्धिजीवी या कहेँ विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों के कुछ विचार उपयोगी हैं। आम बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते हैं, जबकि आम लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी दूसरों के लिए आवाज उठाने के बदले व्यक्तिगत या वैश्विक मुद्दों से जुड़े खास मुद्दों पर ही अपनी राय जाहिर करते हैं।” नतीजा यह होता है कि वर्तमान परिवेश में लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी कहलाने के लिए वैश्विक बुद्धिजीवी के पूरे गुण होने की आवश्यकता नहीं है। कहना न होगा कि बुद्धिजीवियों को व्यक्तिगत इच्छाओं/अनिच्छाओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। बिना किसी पक्षपात के अपनी बात कहनी चाहिए – तमाम पूर्वग्रहों को छोड़कर। इसके साथ-साथ अपनी सीमाएं जानते हुए खुद को दूसरे की जगह रखकर सोचना चाहिए।

नई तकनीक, लोकक्षेत्र और नये बुद्धिजीवी

कुछ मामलों में बुद्धिजीवियों और तकनीक में कोई खास संबंध नहीं होता। आज के उच्च तकनीक से संपन्न समाज में कंप्यूटर और त्वरित मीडिया युग में प्रतिबद्ध आम बुद्धिजीवियों को परिभाषित करने की जरूरत है। बीसवीं सदी की शुरुआत में जॉन डिवे ने ‘थॉट न्यूज’ नामक एक ऐसे अखबार की परिकल्पना की थी जिसमें विज्ञान की नवीनतम खोजों और विचारों को जगह दी जाए। इसके अलावा बर्टोल्ट ब्रेख्त और वाल्टर बेंजामिन ने सिनेमा और रेडियो के क्रांतिकारी परिणामों को देखा था और दूसरे बुद्धिजीवियों से यह अपील की, कि वे इन साधनों का इस्तेमाल समाज को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने और उसे बदलने में करें। ज्यॉ पॉल सार्त्र ने भी रेडियो धारावाहिकों का अध्ययन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रतिबद्ध लेखकों को भी रेडियो और सिनेमा का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भागना ठीक नहीं है।

पहले रेडियो, टेलीविजन और दूसरी इलैक्ट्रॉनिक मीडिया पर तमाम तरह की बंदिशें आयद थीं। रेडियो और टेलीविजन का विवाद, बहसें, जानकारीयां आदि एक नये लोक वृत्त का निर्माण करते दिखाई दे रहे हैं। डगलस कैलनर जोर देकर कहते हैं कि, “बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे इन माध्यमों का उपयोग करके जन मामलों में सीधे जनता की भागीदारियों को सुनिश्चित करें और एक नयी संचार राजनीति और मीडिया-परियोजनाओं का निर्माण करें।”

यह तथ्य अब धीरे-धीरे असलियत को काफी हद तक स्पष्ट करता जा रहा है कि आज की राजनीति में यदि कोई बुद्धिजीवी लोकवृत्त (पब्लिक स्फीयर) में अपनी पैठ बनाना चाहता है, समाज को नई दिशा देना चाहता है – तो नई तकनीकों का उन्हें अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। पहले रेडियो और टेलीविजन ने एक लोकक्षेत्र का या कहेँ लोकवृत्त का निर्माण किया था लेकिन अब कंप्यूटर और इंटरनेट ने अपने अलग लोकवृत्त बनाये हैं। जानकारीयां, बहसें, लोकतांत्रिक सहभागिता और विचारों को पहुँचाने के

लिए नई संभावनाओं को भी पैदा किया है।...और यह कहना शायद गैर-जरूरी है कि इस्तेमाल में लाने से पूर्व इन तकनीकों का बारीकी से अध्ययन जरूरी है।

आज के समय में बुद्धिजीवी होने का मतलब है नई तकनीकों का उपयोग करके विचारों के क्षेत्र में नई और ऊर्जस्वी विचारों की खोज, उसका संपूर्ण वितरण और इससे तैयार हुए लोकवृत्त में अपनी पूरी भागीदारी। डगलस कैलनर इस मुद्दे पर अपनी राय साफ-साफ जाहिर करते हैं, कुछ इस तरह, “आज के नये बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वह अपनी नीतियां इस तरह से बनाएं कि शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास के साथ ही अपनी नीतियों को बेहतर ढंग से प्रसारित करने के लिए नई तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करें। भविष्य में जो वक्त आएगा उसमें बुद्धिजीवियों और नई तकनीक के बीच नाभिनालबद्ध रिश्ता बनाना अनिवार्य हो जाएगा।” इसके बगैर नई तकनीक से भागने वाले लोग अपनी मेधा का सही इस्तेमाल कर ही नहीं पाएंगे और तब वे कैसा लोकवृत्त बनाएंगे और किस तरह के बुद्धिजीवी रह जाएंगे, यह मुद्दा बहसतलब है।

नव पूँजीवादी समाज में लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह और भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति (डेमोक्रेटिक मीडिया पॉलिटिक्स) नई रणनीति के तहत की जाए। मीडिया की लोकतांत्रिक राजनीति में दो तरह की नीतियां होती हैं - पहली कार्यरत मीडिया को लोकतांत्रिक बनाना और दूसरी आम जनता की सुविधाओं, इच्छाओं और जरूरतों के प्रति मीडिया को जिम्मेवार बनाना।

मुख्य धारा की मीडिया के विकल्प के तौर पर एक विपक्षी मीडिया को तैयार करना भी आने वाली ‘टैक्नो पॉलिटिक्स’ का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है। लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति के लिए मुख्य धारा की पूँजीवादी मीडिया समर्थित नीतियों की तीखी आलोचना, उसमें सुधार और वैकल्पिक मीडिया का विकास, इसकी जरूरी शर्तें हैं। मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास तभी संभव है जब एक वैकल्पिक प्रेस का निर्माण हो। आम जनता की पहुँच में टेलीविजन हो और एक सकारात्मक विपक्षी राजनीति के साथ-साथ ऐसी वैचारिक दृढ़ता से सम्पन्न नीतियां हों जो मुख्यधारा की मीडिया को प्रभावित करें। उसकी नीतियों की परत-दर-परत पड़ताल करके उपयुक्त भाषा-शैली और अंदाज में बेनकाब करने का बेहतर एजेंडा हो।

पिछले कुछ दशकों में टेलीविजन संचार माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। 1970 में अमेरिका में हुए टेलीविजन के विकास में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के लिए नई संभावनाएं पैदा की थीं। उसने इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो तत्कालीन संकीर्ण समाज की कठोर आलोचनाएं करता था - उन दिनों मुख्यधारा की मीडिया में इसकी भरमार थी। 1970 में जब टेलीविजनों की संख्या में इजाफा होने लगा तब वहाँ ‘फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन’ का एक आदेश आया जिसके अंतर्गत 1972 के बाद के नए ‘केबल सिस्टम’ को कम-अज्ञ-कम एक चैनल सरकार को शिक्षा और आम आदमी को नई जानकारी मुहैया कराने के लिए देने होंगे। शुरुआती दौर में कुछ कंपनियों ने एक चैनल मुहैया कराई तो कुछेक ने दो या तीन।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति में आम सहमति बनाने के लिए आमने-सामने बैठकर बातचीत करना जरूरी है लेकिन एक चतुराई पूर्ण सहमति के लिए जनता का जागरूक और जानकार दोनों होना बेहद आवश्यक है। कहना न होगा कि वर्तमान संदर्भ में यह रेडियो और टेलीविजन के द्वारा ही मुमकिन है। यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वर्तमान राजनीति की पूरक बने लेकिन मीडिया राजनीति की बढ़ावा अवश्य दिया जाना चाहिए ताकि इसके माध्यम से जागरूक और जानकार लोग सूचनाओं को

अधिक-से-अधिक लोगों तक प्रसारित कर सकें। अमेरिका के टेक्सास राज्य में 'काउंसिल फॉर पब्लिक मीडिया' अपने कार्यकर्ताओं और आमजनों को यह बताता है कि नई तकनीक और कम्प्यूटर वगैरह का इस्तेमाल अपने विचारों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कैसे करें? मीडिया राजनीति में ज्यादा लोगों की भागीदारी, राजनैतिक संरचना की इसकी आवश्यकताओं को दर्शाती है। इसलिए आज नव पूँजीवाद और भूमंडलीकृत शोषण के हथियारों को मात देने के लिए मीडिया राजनीति को और अधिक विकसित करने की जरूरत है - साथ ही इसके लिए और अधिक मेहनत करने की जरूरत भी है।

अगर कोई विकासशील समूह या आंदोलन से जुड़े आंदोलनकर्मी वर्तमान राजनीतिक माहौल में 'अधिकारों' का कोई विकल्प तलाश करना चाहते हैं तो हर हाल में उन्हें अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचानी होगी और खुद से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को जोड़ना होगा। आखिर ज्यादातर लोग समाचार और अन्य अनेक सूचनाएं टेलीविजन से ही प्राप्त करते हैं। प्रसार माध्यम ही आम जनता के विचारों को बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है और यह तय करता है कि किस चीज को गंभीरता से लें और किसको गंभीरता से नहीं लें। अगर वैकल्पिक विकास के यूटोपिया से लैस लोग राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पैठ बनाना चाहते हैं तो उन्हें नई तकनीकों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा।

लोकतांत्रिक समाज के निर्माण और विकास में 'टैक्नो पॉलिटिक्स' को बढ़ावा देने के लिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी नई-नई संभावनाएं पैदा करता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में घर-घर में मनोरंजन और जानकारी का भंडार होगा - मगर वे भारतीय नागरिक हर चीज की तरह इससे भी अंततः वंचित रह जाएंगे जो आज भी दो वक्त्र की रोटी के लिए संघर्षरत हैं और कल भी संघर्ष से शायद नहीं उबर पाएंगे। यह सारा ताम-झाम अंततः इन मध्यवर्गीय नागरिकों को फायदा पहुंचाएगा जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। दूसरी चिंता इसके साथ यह जुड़ी हुई है कि अगर वैकल्पिक विचारों वाले मीडिया का विकास नहीं हुआ तो इसका उपयोग वही कर पाएंगे जो आर्थिक रूप से बेहद मजबूत स्थितियों में होंगे। नतीजा यह होगा कि गरीब मुल्कों के लोग किसी भी तरह इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे। नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और दक्षिण अफ्रीकी मूल के लोगों की इस तक पहुंच हो ही नहीं सकेगी। भारत के 'हिंदी पट्टी' के लोग तो आज भी छोटी-से-छोटी जानकारियां नहीं पा सकते हैं। फलस्वरूप, इन निजी मनोरंजन माध्यमों का विकल्प ढूँढ़ना जरूरी होता जा रहा है।

आज के इस टैक्नो पूँजीवादी समाज में कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी की बढ़ती महत्ता विकासशील मीडिया की जरूरत के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया कंप्यूटरीकृत होने जा रही है और आने वाले वक्त में जिस देश के नागरिक की इस दुनिया तक पहुंच और दखल नहीं होगी वे हर तरीके से दुनिया में रहकर भी किसी और दुनिया के वासी में तब्दील होते चले जाएंगे। गरीब मुल्कों की सरकारें जिस तरीके से बहुराष्ट्रीय पूँजी के आकाओं और पूँजीवादी मीडिया के सेठों को अपने यहाँ बुलाकर मनचाहे तरीके से काम करने के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं उसके कारण भी जनता अपनी मूलभूत जरूरत की चिंताओं में ही गर्क है। उन्हें यह सोचने और जानने का मौका ही उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है कि हमारा आनेवाला वक्त कैसा होगा और हमारी सरकारें किस तरह की दुनिया बनाने वालों के साथ हैं, सहयोगी हैं? इसलिए निजी कंपनियों और सरकारों के एकाधिकार से बचने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि नये-नये जानकारी केन्द्रों की स्थापना की जाए ताकि लोकतांत्रिक समाज में अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कंप्यूटर अपनी क्षमताओं के कारण अंततः एक लोकतांत्रिक तकनीक है, जहां प्रसारण के माध्यम मात्र 'वन वे ट्रैफिक' हैं वहीं कंप्यूटर और इंटरनेट द्विपक्षीय माध्यम है। कंप्यूटर, इंटरनेट, चैटिंग आदि का उपयोग आम जनता एक दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकती है। मोडेम और टेलीफोन लाइनों की

सहायता से तमाम लोग – जो इससे जुड़े हैं, जुड़ सकते हैं – वे लोग तमाम मुद्दों पर विमर्श कर सकते हैं। इस तरह यह एक नये संसार और प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। वर्तमान समय में जन सरोकारों से जुड़े लोगों के लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर, इस दुनिया में प्रवेश करके गरीब मुल्कों की व्याख्या प्रस्तुत करें, जिससे उन दमित और शोषित तबकों तक भी इसका लाभ पहुंच सके – जो आज तक तो वंचित हैं ही और सरकार की जैसी नीतियाँ हैं, राजनीतिज्ञों की जो कार्य शैली और प्रतिबद्धताएं हैं उससे आगे भी दुनिया में हो रही हलचलों से वे वंचित रहेंगे। ‘टेक्नो पॉलिटिक्स’ में शामिल विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों पर ही अंततः यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वे एक वास्तविक लोकवृत्त के निर्माण के लिए जन-जन तक सूचनाएं अपने-अपने तरीके से पहुँचाएं।

सहायक ग्रंथ

1. फ्रेडरिक जेमसन : ए क्रिटिकल रीडर, सं. डगलस कैलनर एंड सीन होमर, 2004
2. मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी : डगलस कैलनर, 2005
3. मीडिया कल्चर : कल्चरल स्टडीज, आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स बिटवीन द मॉडर्न एंड द पोस्ट मॉडर्न : डगलस कैलनर (1995)
4. द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलिक्चुअल : एलन लाइटमैन।
5. द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ द पब्लिक स्फीयर : एन इनइक्विटी इंटू ए कैटेगरी ऑफ बूर्जुआजी सोसाइटी, जुरगेन हेबरमास, 1991, अनुवाद : थॉमस बर्जर, एम.आई.टी. प्रेस।
6. मासेज, क्लासेज, एंड द पब्लिक स्फीयर : माइक हिल, वारेन मोन्टाग, वर्सो, 2001
7. पावर एंड पॉलिटिक्स इन ग्लोबलाइजेशन : द इंडिस्पेंसबल स्टेट : होवार्ड एच. लैन्टर, 2004
8. रूल ऑफ एक्सपर्ट्स : इजिप्ट, टेक्नो पॉलिटिक्स, मॉडर्निटी : टिमोथी मिथेल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002

पंकज पराशर प्रायः, महत्वपूर्ण किताबों को लेकर ‘पहल’ में लिख रहे हैं। नोम चोम्स्की के बाद पूंजीवादी दुनिया में वामपंथी रूझान बढ़ने के दृश्य पर वे विस्तृत काम कर रहे हैं। नोम चोम्स्की की ताज़ा किताब ‘फेल्ड स्टेट्स’ पर अगले अंक में संपादकीय टिप्पणी पाठक पढ़ सकेंगे।

सांझ होइत गाममे

भारतक नक्शापर
जकर कोनो टा जिक
कतहु देखार नहि होइत अछि
से एकटा कोनो गाम
आ ओहि गामक एकटा सांझमे हम
ठाढ़ छी चुपचाप
बहुत दिनपर घुरल
कोनो बटोही जकां

जे तकैत अछि अपन घर
घरक आगूमे रोषल सिंगरहार
आ सिंगरहारके नहि देखि

घुरि अवैए बेर-बेर
हिया हारिके
भ' जाइए ठाढ़
चुपचाप

चुपचाप ठाढ़ ओ बटोही
तकैत रहैए
ठकनबैत रहैए
सोचैत रहैए
किनसाइत ---
किनसाइत ---
किनसाइत ---

चिन्हवाक प्रक्रियामे
बेर-बेर असफल होइत ओ
बेर-बेर तकैए किछु परिचित निशान
बेर-बेर तकैए किछु पहिचान
अपन स्मृतिक दरिद्रतापर कानि
वैसि जाइत अछि थसथसाक'
चुपचाप कोनो ठाम

ओ तकैत अछि
अपन हृदयमे बसल गाम
गाममे अपन घर
घरक आगूमे रोमल सिंगरहार
ओ तकैत अछि बेर-बेर

मोन पड़ैत छैक
बेर-बेर पड़ैत छैक मोन
'ने ओ नगरी, ने ओ ठाम ---
फकड़ा गुनबैत ओ बुढ़िया

बुढ़ियाक तमाकुल मांगब
मोन पड़ैत छैक
एक-एक क' सबटा

मोन नहि पड़ैत छैक घर ?

घर नहि मोन पड़ैत अछि
वा घरे नहि मोन पाड़ैत अछि
घर ओ नहि चिन्हि पबैए
वा घरे ओकरा नहि चिन्हैए
घरसँ ओ गेल छल
कि घरे ओत'सँ गेल छल
ई एकटा भयंकर समस्या अछि उपस्थित

एहि मुन्हागि साँझमे
जे निरन्तर गाढ़ भेल जा रहल-ए
तेज आँचपर खोलैत दूध जकाँ
ओ ठाढ़ अछि
निरन्तर अस्पष्ट होइत जा रहल
साँझक गाछ तर
ओ ठाढ़ अछि
ठकमकाएल
साँझ क' घुरल सुग्गा जकाँ
घर केँ तकैत

साँझक गाछमे
गाछक झाँखुड़ सबहक दोगमे
निरन्तर अस्पष्ट होइत गाम

आ गाममे ठाढ़ ओ
निरन्तर अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
निरन्तर
बाढ़िमे आस्ते-आस्ते डुबैत
आ अंततः चक्कडुम होइत
घर जकाँ
ओ अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
साँझ खन गाममे
गाममे साँझो खन
ओ विलीन भेल जा रहल-ए
आस्ते - आस्ते --
आस्ते - आस्ते --
आस्ते आस्ते --



नये इलाके में

इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो—
क्या यही है वो घर ?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख कर

नमः

वहस-यंकज यनाभनक साहित्यिक चानि मेथिली साहित्यिक कानी अथाय थिक

विदह-सदह २ (२००६-१०) सँ यंकज यनाभनक साहित्यिक चानि आ साळ्वन अयनाधक यायक धेलक मद्दा-विश्टार एल अछि। ओ येष (अथ यत्रिकाक सन्ध्यादक श्री गजद्व ०।कूनकँ जाळ्ण छनि। हूनकन अयनाध यकउवाक चाना कन ऊपक प्रशंसा कयल जाय, कम हयगा। “विदह”क मेथिली प्रवचन-समालाचना- अंक, अळ याल-खाल लल कअक यूग धनि विलसिग एऽ कऽ निवद्ध नहण, स “समय कँ अकानेग” कहव कोन अछि।

साहित्याम चौर्यकलाक उदाहनध यद्दिनहँ अवेग नहल अछि (गारयगना। मूदा अक वनक चानि यकअ (गलाक वाद प्रायः चानिक आनायी साहित्यकान मोन-ब्रण धानध कनेग नहलाह अछि आ मामिला उँढाळ्ण नहल अछि।

मूदा गहि यनम्यनाक नियनीग अळ वनक चान ‘सिद्ध चान’ निकलल अछि आ विगण अक दशकसँ निनन्तन चानि कनेग जा नहल अछि-सह कारिकऽ। आ गहन मद्दाचानकँ मेथिलीक साहित्यकान आ संस्था सर गनहणीयन ३०।-३०। कऽ यूनश्रुग कलक अछि आ समीजाक चासनीम चानायल कविगा सवकँ वानि दल (गल अछि।

विदह-सदह-२ प्रमाध-यूनसन अरिया(ग टा नहि ल(गोलक, अथिगु अहन मद्दाकांडी असामाजिक गलक विनद्ध साहित्यिक दधु आनायिग

कऽ अयन “वाल्मुनस” सह्य प्रदर्शित कलक अछि। एक दशकम गीन वन एकअयल चान प्रायः “उयन उरिल” हल्लग अछि आ अयन अनूचि। सीमाहीन महद्वाकांजाक यूनि लल अयन वनीय संवर्गीय शक्ति कौ सीठीक नूयम उयथाग कनेग अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उयनान अयन ययन सँ उही सीठीक निचाँ खसा देग अछि। रुन ठाकना अयन द्विरन-रुसवूक-नट ना यत्रिकाम गानिक निकृष्टगम रुनयन उगनऽ म कनियां दनी नहि हल्लग छै। उा नाम बदलि-बदलि कऽ गानि यटैग अछि आ अयन प्रशंसाम ज.अ.यू.क छाप्र-छापाक याचकाँ लिखवाम अयथाँ रऽ जाळग अछि। उा हिन्दीक काना वऽका साहित्यकानक वटीक संग अयन नाम जाँ विवादक ना प्रम-प्रसंगक खिस्सा नस लऽ लऽ कऽ प्रचानि कनेग अछि। अदन प्रवृत्ति कऽरा आठान गिकऽमवाजम दखल गेल अछि ज हिन्दीक घेघ-घेघ नामक माला जयि कऽ म(०)मा० हल्लग चहैग अछि। वस्त्रः ७७ चिन्ताजनक गथ थिक ज मेथिलीक नव-गुनक हिन्दीक घेघ-घेघ नामक वैशाखीक एक अनूनि किउक हल्लग छनि?

“विदहक” “७७नद्वायनीक विनदध” यटि कऽ नाळ्याँ ०।७ रऽ जाळग अछि। यहल-८६ आ आनस-२३ म ज याल खूजल छल, अळ गथाकथि साहित्यकानक, गकना वाद मेथिली साहित्यसँ वानि दल जवाक चहैग छला मूदा विउमना दखू ज वगना समिति सम्मानि कऽ दलका। “मेथिल ब्राह्मण समाज”, नहिका (मधुवनी) सन अखिगन संस्थाकँ चकचाही लागि गेल, जखनिक संस्थाम विद्या साहित्यकान उदयवद्ध मा “विनाद” आ यहाकू प्रारुसनगध छथि ७७ संभयविहीन अछि ज यूनसूग कनवाम विनादजीक महद्गुर्ध

रूमिका नदल देग। “विदह” झाना नदथाद्यारन कलाक वावइद
अखन धनि वगना समिगि अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, नदिकाकँ
अयन यून्धान आयस कनवाक वा आन कानाटा कानवाळी कनवाक
वगनगा नदि व्सा नदल छे आ सई गुम्मी लवन अछि। अहन
“ऊ७-संस्था” सर मैथिली साहित्यक उपकान कनेग अछि वा
अयकान? छी कना मानल जाय ऊ यदल-८६ वा आनइ-२३ अछ
इनू संस्थाक काना अधिकानी वा साहित्यकानकँ यदल नदि छलनि?

छी आश्चर्यजनक सग थिक ऊ मैथिलीक कउटा येघ साहित्यकान
यंकज यनाशनक कृप्रिम काब आ आयागिग श्वावलीम दसि (गलाह
अछि। “विलिखिग कउक यूग म निवद्ध” क रूमिकाम अनना विदशी
साहित्यकानगधक गीस-वालिस टा नाम उदिना नदि गनाउल (गल
अछि, अयन कविगा कँ विश्वरूपनीय प्रमाधिग कनवाक लल अखिगन
चान अना कऽ सकेग अछि। सझावना वनेग अछि ऊ उगलस
कलनन उकाँ उदू सर कविक नचनाक रावरूमिक वा श्वावलीक
चानिक प्रमाध अदी काब-याथीम रटि जाय। अंग॥ मि. दाळूक
कान (0कान? मैथिलीम गँ लाक विश्व-साहित्य कम यडेग अछि। गकन
नाजायज रायदा काना ब्रैकमलन किउक नदि उ0।उग? अखिन
टक्का-यालिटिक्का की थिक- टकनिकल यालिटिक्का थिक, सेह किन?
अकाना वदेलग माँसा दऽ कऽ याकिरानाक याग कयल जा सकेग
अछि। “टक्का-यालिटिक्का” वदेलग किनध-याग्री यून्धान, वेददी-
मादध्वनी सिंद “मदध” यून्धान, अक धनि ऊ विदिगजीक
अकादमीयाक यून्धान लल जा सकेग अछि। प्रदीय विदानीक
स्यप्रक रागिज-कका समझक मर्यादाक अगिक्रमध कयल जा सकेग

अच्छि। प्रा. अनूद्य कमलक “नय झ्लाक मं” संधमानी कऽ कऽ
 “समय कँ अकानल” जा सकी अछि। आन गँ आन, अछ्छ
 टकनिकल यॉलिटिक्क वयेलग जीवकान्जी सन महानथी
 साहिष्णकानसँ “त्रिलिखि कअक यूग...” याथीक समीजा लिखवा कऽ
 “मिथिला दर्शन” (१) सन यप्रिकाम छयवा कऽ स्थायि आ अमन
 रल जा सकी चछि। मैथिली साहिष्णक सरसँ येध सरल ओजान
 थिक “टक्का यालिटिक्क”!

झी मानल जा सकी अछि ज मिथिला दर्शनक सग्यादककँ आनश्-
 २३ आ यदल-८६ कालकागाम नहि रलल द्वाञ्छि। मूदा जीवकान्जी
 नहि यडन द्वाह स मानवाम असोकर्य रऽ नदल अछि। जीवकान्
 जी गँ प्रयाग शुक्क “चद्वरागा मं सूर्योदय” आ अही शीर्षकक
 नानायधजीक कविगा (चद्वरागाम सूर्योदय) सह यडन द्वाह ज
 छयल अछि मैथिलीमा। तखन यंकज यनाशनक समुद्रसँ असंघ्य प्रश्न
 यूकऽवला कविगाक रावार्थ किअक नहि लगलनि ज समीजाम कलम
 गाँ प्रशंसा कनऽ यलनि वा कना (गलनि? अकना “प्रायोजिग
 समीजा” किअक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्क वा नानायधजीक
 समुद्र विषयक कविगासँ वशी मेलिकगा यंकज यनाशनक कविगाम
 रललनि जीवकान्जीकँ? अछ्छ सर कविगाक कनियाँ “छाया”क शंका
 नहि रलनि समीजककँ? “सग्याक सरटा मर्मान्क यकान”क नाटिस
 लवऽवला समीजककँ साहिष्णिक चानि अस्य आ मर्मान्क यीजदायक
 नहि लगलनि? आव जीवकान्जी सन समीजकक “याजीशन द्वाञ्छ”
 रऽ जगनि स अद्वाज गँ मिथिला दर्शनक सग्यादककँ नदियं नदनि,
 उदय चद्व मा “विनाद” कँ सह नहि नदनि। झी अरिहान गँ

यंकज यनाशन राकँ नहल हगनि? वचान “यनाशन” मूनिक् आग्ला
 स्तर्गम कनेग हगनि आ यंकसँ जनमल जगक कमल अछि सव
 अविश्वसनीय यथार्थक सामना कनेग हगाह। यनाशन (गोप्री रुऽ कऽ
 गीन वन चानि कनाळ “यनाशन” महाकाव्यक नचयिणा स्र. किनधजीकँ
 सह कनवेग हगनि। आखिन जीवकान्कजी साहित्यिक चानिक नारिस
 कि७ न ललनि, जखनकि हूनका विचारँ “मैथिलीक समीऊक प्रायः
 मूर्खणा पीविकऽ विषदमन कनेग अछि”(विदह-सदह-२-२००६-
 १०)/ विनीग उग्रल-साआकान आ जीवकान्कजी स्त्रयँ यंकज यनाशनक
 चानिवला कविगा-याथीक समीऊक छथि, अयिग चौर्यकला प्रवीध
 कविक धान प्रशंसक छथि। तखन अळ समीआ-आलखम अन्निहिन
 असीम-प्रशंसा साकांज-या०ककँ “विष-दमन” काना न ल(गोक?
 हूनका सन “यडाकू” समीऊक-या०ककँ “हॉल याजीशन”म
 अननिहान “अक्षयट आ हँविचूअटउ” साहित्य-चानसँ प्रशंसा आ
 यूनकान दूनू यावि जाय गँ मैथिली-काव्यक ङ्गी उक्ख थिक वा
 दूरस्थ? अंगः विदह-सदह टा किउक निह्य कलक अहि घटनाक?
 आन काना यत्रिका किउक नहि कलक? जँ. नमानह मा “नमः”
 ङ्गुननटयन निह्य कनेग छथि गँ घन-वाहन यत्रिकाम किउक नहि
 जकन डा सग्यादक छथि? चाना समिगि, यटना सम्मानिग कनेग
 अछि अहन-अहन साहित्यकानकँ तखन अयन यत्रिकाम काना निह्य
 कनग, जखनकि यूनकान आयसा नहि लेग अछि, जानकानी रुलाक
 वा साकांज साहित्यकानक अनूनाध प्राफ रुलाक वादा? नचिकाजी
 नटयन निह्य कनगाह आ “विदह”म छयग गँ “मिथिला दर्शन”म
 किउक नहि निह्य वा सूचना छयल? कानध ग्यष्ट अछि- जीवकान्क

समीक्षा यंकज यनाशनक काद्य-याथीयन छयग, गखन उद्दी याथीक चानि कयल कविताक निश्च काना छयग? चान् राग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धड्डी उठि नहल अछि- यिगामह आ आचार्यगधक समझ आ (अनजान म सही) दूनका लाकनिक झाना। मैथिल ब्राह्मण समाज, नदिका; चणना समिति, यटना आ साहित्य अकादमी, नल्ली दिल्लीम अन्गः कान अन्गन अछि ना नहल? अहन नामी यून्सकानक संचालन आ चयनकर्ता महानथी सरकै नव लाककै यहुवाक वगनगा किउक नहि व्साळ्ग छनि? विना यहुन यून्सकानक निर्धय ना समीक्षाक निर्धय कएक उचिग, जखन कि ल्ली चानि गसन वनक चानि थिक आ स छयि-कऽ रञ्जाराउ रल अछि। अकना वनध आ वनीय साहित्यकानगध झाना काद्य-चानि, आलख-चानिकै प्रथय दल जायव किउक नहि मानल जाय, जखनकि आनष्ट, मैथिल-जन, यदल आ विदह-सदह यद्दिनहि छायि चकल छल? की साहित्यिक चानिकै प्रथय दव, दलाल वर्गकै प्रथय दव नहि थिक? अहन सहावनायूक नव कविकै प्रथय दव मैथिली साहित्य लल घाणक अछि ना कल्याधकानी, अकना मौलिकाायन गीन वन प्रश्न चहू लागल रहल्लक? की याथीक आकर्षक गप्पा देखि ना विदशी कविगधक नामावली (रूमिकाम) योडि कऽ समीक्षा लिखल जाळ्ग अछि ना यून्सकानक निर्धय लल जाळ्ग अछि? ऊँ स रल रह गँ सव किछ “ठिक्क छै रहल्ल”?

अळ् सवसँ गँ जीवकान्जीक वाग सय व्साळ्ग अछि ऊ समीक्षकगध दानू यीवि कऽ ना यैसा यीवि कऽ ना मूर्खता यीवि कऽ समीक्षा लिखै छथि। उगलस कलननक “टक्कायालिटिक्क” गँ छयि

(गल “यदल”म चाना कऽ। आव जीवकान्कजी, झान नंजनजी अथवा
 दिदी जगक आन साहित्यकान-सम्यादकसँ यूछथू ज नाम चाम्प्रीवला
 नवना कणय (गल, की रल, कान नामं छयल? यंकज यनाशनक नामं
 कि यदीय विद्वानीजीक स्यूप्रक नामं (अन्वाद नूयम)। ॐ निसर्व
 अखन नदि रल गँ रविद्यम यून्ः अकटा साहित्यिक चानिक याल
 खूजण? अंगः अकटा माँछकँ कअटा याखनिकँ प्रदूषण कनअ दल
 जाय आ स कअ वन? उदय-कान्क वनि कऽ गानि यदवाक आदणि
 गँ यूनान छनि जँ. महाचान काँ ककना “सनीसूय” कहि सकैत छथि
 (मैथिल-जन) आ काना यनिवानम घासिया कऽ विष वमन कऽ सकैत
 छथि। ऋष्यसक सर गुधसँ यनियुर्ध जँ. याल वावाकँ चानिक
 रविद्यवादी कनवाक वअका गुध छनि गँ दिनका नामी रूटवाँल टीम
 झाना यासल जाळण अछि, जाहिसँ “विश्व-कय”कँ दोनान अळ
 “अमाघ अफ्रक” उययाग अयना हिसावँ कयल जा सकय।

सहनसा-कथा(गाष्ठीम यी०) दिनकन यहिल कथाक शीर्षक छल- हम
 यागल नदि छी। ॐ उद्याषष्ठा कनवाक की वगनगा नदिक- स
 आळ लाककँ वृषा नहल छेक। अविनाश आ यंकज यनाशनक
 मामाजी गहिया दिनकन कथाकँ “रिथधीक”क्रमम मैथिली-कथाक
 “रनिंग घाळ्ठ” मानन छलाह। आळ अ “रनिंग घाळ्ठ” ठीक
 अक हिसावँ “रनिंग घाळ्ठ” प्रमाधिग रल, कानध कथाक उहि
 शीर्षकम सँ “नदि” हरि (गल अछि, दिनकन गवाना चानिसँ।
 दिनकन यहिल चानि (अनूध कमलक कविगा- नअ ञ्जलाक मँ) क
 निद्या प्रस्तावम “मामाजी” आ जँ. मद्दुक्कँ छाँ, सहनसाक (षष
 सर साहित्यकान दस्काउन कऽ “आनष्ट”कँ यी०)न छलाह। आळ

डा हस्ताउन नहि कनिहान सर कच्ची कारि कऽ वाम-दहिन गाक-
माँक कनवाक लल वाध छथि द्वेध-चनिग्र आ दाहना मानदधुक
यनिधाम सेह दाहना अछि। अविनाश गखन गँ दखान रऽ जाहना
छथि जखन डा विदह-सदह-२ म लिखे छथि ऊ “एकना सार्वजनिक
नहि कनवे”। नूका कऽ सूचना दवाक कान वगनगा? यंकज यनाशनसँ
सम्बन्ध खनाव हवाक उन वा काना “टक्कायालिटिक्का”(?) कन चिन्ता?

विदह-सदह-२ क या०कक संदेश गँ कएटा साहित्यकानकँ दखान
कऽ देग अछि। जगय नाजीव कूमान वर्मा, श्रीधनम, सनील मल्लिक,
धामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.क.चौधरी, सुराष चन्द्र यादव,
शम्भू कूमान सिंह, विजयदत्त मा, रालचन्द्र मा, अजिग मिश्र,
क.अन.मा, प्रा.नचिकगा, वृद्धिनाथ मिश्र, शिव कूमान मा, प्रकाश चन्द्र
मा, कामिनी, मनाज या०क आदि अयन मुखन राखाम प्रखनगायूरेक
निबनीय घटनाक निब्या कलनि अछि, तहि अविनाश, जे. नमानन्द
मा “नमध”, विरानानीक माँयल-गायल शब्द आश्चर्य-रावक उद्भक्त
कनेग अछि। मूदा सँगायक वाग ह्नी अछि ऊ या०कक “प्रवल राव-
रंगिमा” साहित्यकानाक “मंदायल आवाज”क काना चिन्ता नहि कनेग
अछि। विरानानी गँ कमाल कऽ दलनि। अहि ०म मेथिली राखा-
साहित्यक एक सय समष्टा गनवाक उचित स्थान नहि छल। ह्नी
उना० काल खाना० आ महादत्तक विवाद कालक लगनी रऽ (गला
काना चान वन-वन अयन कू-कृष्णक यनिवय दऽ नहल अछि आ
हूनका समय नष्ट कनव वृषा नहल छनि आ चानकँ दखान कलासँ
दूख रऽ नहल छनि? डा अयन प्रगिक्रियाम कएक आग्र श्लाघा
आ दीन-रावना ब्रह्म कलनि अछि स अयन यए अयन ०७ रऽ

कऽ योऽ कऽ वूमि सकोऽ छथि। दिदीयाम अहिना रऽ नहल अछि,
 गँ मेथिलीम मारु कऽ दल जाय? आव दिदीसँ यूछि-यूछि कऽ
 मेथिलीम काना काज दायग? विरगनानी आप्रना चड्ढमकँ आप्रना मिलन
 कना कहैग छथि? दूनकन उयजा काना मानल जाय? ऊ सर
 साहित्यिक कार्यक्रमम नागल जाळ्ग छथि, सम्मान आ यून्धान यवै
 छथि, याऽक झाना योऽ आ चर्विग दळ्ग छथि। समीजाक
 भिकाळ्ग की उच्चवर्धीय (?) साहित्यकानकँ मेथिलीम नहि छनि?
 समीजाक दृष्टिगि सर जागिक मेथिली साहित्यकान लल एक नंग
 त्रिषम अछि। ऊळ म जागिग विरद अना रलऽ ज ब्राह्मण-
 समीजाक, आनऊक दृष्टिका(हँ निम्न जागि (?)क साहित्यकानक किछ
 वर्षीऽ समीजा (सह सकानाग्नक नूयँ) कलनि अछि। समीजा आ
 आलाचनाक त्रिषम स्थितिक कान(हँ ऊँ नेनाथक भिकान रऽ जाय
 लखक, गँ लखकीय ग्रगिबद्धाक की अर्थ नहि जायग? विरगजीकँ
 वूमल नहि छनि ज दूनका लोकनिक वाद मेथिली महिला लखनम
 कामिनी, नूगन चड मा, दइना मा, माला मा आदि अयन गवनक
 संग यदार्यक कऽ चकल छथि। दूनका न कामिनीक कविगा संग्रह
 यडल छनि आ न “जोऽयाक अछेऽी माऽ”। दूनका अयन
 गुनदक वाग मानि दिदीम जाळ्सँ क कहिया नाकलकनि? ऊ (गला
 छथि दिदीमा मागृयाक प्रनधा अङ्घिगीय दळ्ग छे। मेथिलीक जऽ
 संस्था अथवा समीजाक सरयन प्रदान कनवाम हमना काना आयगि
 नहि, मूदा अर्थलार गँ अय नगथ अछि। सामाजिक सम्मान
 विरगजीकँ अवथ रलनि अछि। समाजम “जऽ”लाक छे गँ “वगन”
 लाक सह छेका। दूनकासँ मेथिली राखा-साहित्य आ मिथिला-समाजकँ

येध आशा छै, दीनराव ना आभूषाघासँ ऊयन उठि काज कनवाक वगनगा छैक। सजम छथि उ। दूनका श्रय लवाक द्वाऽसँ वँचवाक चाही। अग्रथा साहित्य अकादमी प्रगतिनिधि, दिनालियायन कन भिकान इनीगध आ मेथिलीक सजम साहित्यकानम की की अन्न नहि जायग? विरानानीक विचलनक दिशा हमना चिन्ति आ ब्रथि कनेग अछि। उ दमगन लिखका छथि, सभक नवना कलनि अछि, आऽ न काहि समीऊकगध कलम उठवायन वाध दव कनगाह। समीऊकक कर्णदीनगासँ को लखक निनाथ ह?

यंकज यनाशनक श्रृंखलावद्ध साहित्यिक चानियन सार्थक प्रगिक्रिया दव काना साहित्यकान लल अनुचि नहि अछि कहसँ। साहित्यकान लल साहित्यिक मूल्यक प्रगि उक्तन प्रगिवद्धगा मृथ कानक द्वाऽग अछि आ हवाका चाही आ कना दखान कनवाक “वाउनसा” हवाक चाही। “वाही”वला यऊ साहित्यम वशीऽ द्वाऽग अछि। उहन-उहन गहीन विषययन साहित्य आ समाजक “चथी” उहन घटनाकँ प्राप्तादि कनेग अछि आ ऊवदाह उगाकँ वढवैग अछि, रग्या-साहित्यकँ वदनाम गँ कनिग अछि। जावन यंकज यनाशनक चानि-काद्यक समीजा लिखल जाऽग नहग, विरानानीक मूल-नवनाक समीजा क लिखग? ककना जनूनी वृषणैक? विरानानी अयन गँ समीजा प्राप्ताजिग नहि कनउगी? सजम लखकक ब्रवहानाक अयन कन द्वाऽग छै। गँ संगठिग रुऽ चानिक रर्षना हवाक चाही।

નાજકમલ ઘોઘની આ આન લલ્લકલ નલનાક ઘાનિ યંકજ યનાઘન
પ્રસંગ

યંકજ યનાઘન ઉરુ અનૂઘ કમલ ઉરુ ડગલસ કલનન ઉરુ ડદયકાન
ઉરુ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,
220.227.174.243 ઉરુ.....

ParasharsIntellectual Theft

યા0કલ સૂલનાક વાદ ળી યા લલ અઠ્ઠિ (આ ડાકન સઘાયન
કળ (ગલ) ડ ંદિ લલ્લકલ ળી ંદિ ધનલ્લક યદિલ કૃઘ નદિ
અઠ્ઠિ। ળી લલ્લક યદિન સલ્લ Douglas Kellner ક

Technopolitics क यँकिॆॆ अन्वाद मूल लखक नूयम नामसँ स्नानंजनक हिन्दी यत्रिका "यद्दल"म (वाखासँ छयवडालका गकन यगा चललाक बाद "यद्दल"म अदि लखक नवनाक प्रकाशन वद्द रऽ गला अदि सम्बन्धम विस्फुग आलख विदद्दक अगला अंकक सम्पादकीयम दल जाअग।

२. अदि सर घटनाक बाद यंकज यनाशनकँ विदद्दसँ वेन कअल जा नद्दल अछि। विदद्द आर्काइवसँ "विलक्षण कळक ग्रम निवद्ध" याथीकँ द्दटाडल जा नद्दल अछि आ अकटा व्वनद्वायनी द्धाना अदि याथीक (उगलस कलनन वला घटनाक्रमक बाद) जाँच किद्ध चल लखक-या0क द्धाना कअल जअवा धनि नद्दग। प्रकाशककँ सह उचिा यूलिसिया कार्यवादी (यदि आवथक द्दअअ गँ) लल अदि समरु घटनाक्रमक सूचना दऽ दल गल अछि।

३. या0क उगलस कलननसँ व्वी-मल kellner@gseis.ucla.edu यन "यद्दल" यत्रिका वा गकन सम्पादक श्री स्नानंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com यन आ दैनिक जागनधसँ nishikant@jagran.com, response@jagran.com, mailbox@jagran.com, delhi@nda.jagran.com यन सम्यक कअ विस्फुग जानकारी लऽ सकै छथि। उगलस कलननक आर्टिकल गूगल सर्चयन technopolitics टाव्वय कअ गकि सकै छी आ यदि सकै छी। यद्दल यत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com यन सह यद्दल यत्रिकाक यूनान अंक सर आफ्-आफ् दवाक ग्रान्द रल अछि।

विस्मृत जानकारीक लेल सूची याओकगध अहाँक धन्यवाद। रविश्वराम
सह्य अहि घटनाक यूनानावृत्ति नहि दूअओ गहि लेल अहाँक यानस्वी
नज्जिनक आस आगाँ सह्य नहण। अहि गनहक काना घटनाक
जानकारी हमन ब्लू-यप्र ggajendra@gmail.com यन अवस्थ
यओवी।

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

अन्तर्जालयन ब्लैकमलिंग विन्द्ध गूगल, विहाजगण आ ग्लागवानीक
सूचि कनू साळ्वन ब्राळ्म आ ब्लैकमलिंग नाकवा लेल सह्य ठन
नास प्रावधान छे, विशेष जानकारी ggajendra@gmail.com
यन सन्धक कनू। अहाँसँ यप्रकान, यूजयन, यप्रिका आ द्विष्टीक
गधमाद्य लेखकगध/ प्रारुसन/ विश्वविद्यालय आदिकँ अहि घटनासँ
सूचि कनवाक अनूनाध अछि। विशेष जानकारी लेवाक आ दवाक
लेल ggajendra@gmail.com यन सूचि कनू।

Reply 01/26/2010 at 01:56 PM

2

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

you may also brought this episode before
sanjay@jagran.com

Thanks readers.

Reply 01/26/2010 at 12:25 AM

3

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

But this time he has not used his name as naitihl, nithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply 01/25/2010 at 09:48 PM

4

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spanned through ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 and has been forwarded for taking Police action immediately.

Reply 01/25/2010 at 09:45 PM

5

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

Professor Kellner has thanked me for this detective work, but it all your efforts dear

reader.

Reply 01/25/2010 at 08:21 PM

6

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

pahal =- 86, aaranbh -23 aa arunkamal ak naye ilake
ne ka sambandhit prishta pathebak lel dhanyavad
pathakgan.

Reply 01/25/2010 at 08:16 PM

7

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

<http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed253a/newDK/intell.htm>ehi link par douglas keller ke lekhak
anuvad pahal-86 ke page 125-131 par achhi -
soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply 01/24/2010 at 08:16 PM

8

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

ehi ghatnakram ne kono pathak lag je Arun Kanai
 jik kavita "Naye Ilake Me" hoi nh aa Aarabh (ank
 23, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha
 (March 2000) ne prakashist maithili kavita "Sanjh
 Hoi Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par
 soochit karathi - Dhanyavad.

Reply 01/24/2010 at 08:02 PM

9

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

ehi ghatnakram ne bahut ras aar jankari aa dher
 ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/23/2010 at 11:40 PM

10

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

निदरक याओकक सूचनाक बाद ॐ यी चलय अछि (आ उकन
 सथायन कल (गल) ऊ अदि लखक ॐ अदि गनरक यहिल
 कृण नदि अछि। ॐ लखक यहिन सह Douglas Kellner क
 Technopolitics क यीकिणः अनुवाद मूल लखक नूयम नामसँ
 स्नाननंजनक हिथी यत्रिका "यहल"म (आसासँ छयवडालक, प्रदीय

विद्वानीक वटा प्रधन विद्वानीसँ अनूवाद कनवलक आ कदलकें ज अनूवाद छयवा दव मूदा अयना नामसँ छयवा ललक, प्रधनकें कदलकें ज अनूवाद निजक रस (गल आ रुन रुना गल । त्कन यगा चललाक वाद "यदल"म अहि लेखकक नवनाक प्रकाशन वद रस (गला। अहि सम्वन्धम विरुग आलख विदलक अगला अंकक सन्ध्यादकीयम दल जाग।

२.अहि सर घटनाक वाद यंकज यनाशनकें विदलसँ वेन कअल जा नदल अछि। विदल आर्काइवसँ "विलक्षण कलक यूगम निवद्व" याथीकें दटाअल जा नदल अछि आ अकटा व्वनकायनी झाना अहि याथीक (उगलस कलनन वला घटनाक्रमक वाद) जाँव किछ चूल लखक-या0क झाना कअल जअवा धनि नदल। प्रकाशककें सल उचिग यूलिसिया कार्यवादी (यदि आवथक दूअउ गँ) लल अहि समरु घटनाक्रमक सूचना दs दल (गल अछि।

३.या0क उगलस कलननसँ ब्लि-मल kellner@gseis.ucla.edu यन "यदल" यप्रिका वा त्कन सन्ध्यादक श्री हाननंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com यन आ दैनिक जागनधसँ nishikant@jagran.com, response@jagran.com, mailbox@jagran.com, delhi@nda.jagran.com यन सन्ध्याक कअ विरुग जानकारी लs सकैग छथि। उगलस कलननक आर्टिकल गूगल सर्चयन technopolitics टाब्ल्य कअ गाकि सकै छी आ यटि सकै छी। यदल यप्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com यन सल यदल यप्रिकाक यूनान अंक सर

आरु-आरु दवाक ग्रान्ठ रल अठ्ठि।

विरुग जानकानीक लल सूत्री या०कगध अहाँक धयत्राद। रविशम
सह अहि घरनाक यूननावृप्ति नहि दूअउ गहि लल अहाँक यानखी
नजनिा आस आगाँ सह नहग। अहि गनहक काना घरनाक
जानकानी हमन ँली-यग्र ggajendra@gmail. यन अवथ
य०वी।

Reply 01/22/2010 at 12:03 PM

11

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

out of these three addresses of the spammer i.e.
pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and
pkjppster@gmail.com the address
pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and
addresses pparasharjnu@gmail.com and
pkjppster@gmail.com stands verified and
confirmed.

Reply 01/21/2010 at 10:00 PM

12

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

the https host matches reliance communications and the corresponding email ganghar at gmail dot com and naithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com

Reply 01/21/2010 at 08:50 PM

13

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, Process to file complaint against Cyber Crime Act is being initiated and the organisation being taken into confidence.

Reply 01/21/2010 at 06:13 PM

14

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

naithil, mithila aa subodhkant namse abhadra aa

blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lelgel achhi,ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 aa ban kayal ja rahal achhi , agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi .

Reply 01/18/2010 at 11:19 PM

15

VI DEHA GAJ ENDRA THAKUR sai d...

comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi

Reply 01/18/2010 at 09:27 PM

16

स्वाधिकांग sai d...

अविनाशक सहा 220.227.174.243 आर.एस.पी.सँ अहि प्रकानक ब्लैक-मेल अवेग नहै मूदा आ मामिला खगम क दन नहथिना आ टिग्रदी सर अक घृष्टिग छेक गेया अग दल जा नदल अछि।

यंकज यनाशन उरुह.....उगलस कलनन उरुह अनूध कमल उरुह...

उगलस कलननक नीचाँक आलखकक यंकज यनाशन झाना चानि सिद्ध कलक ज अक दशक यद्दिन अहि लखक झाना अनूध कमलक चानि

सँ आळ धनि दूनकाम काना गनदक यनिवर्नि नदि आउल छथि
 हँ, आव ठा यरुना विश्वविद्यालयक प्रारुसनक नवना चानवासँ आगाँ
 वढि (गल छथि आ कोलिरुनिया वि.वि.क प्रारुसनक नवना चानावउ
 लागल छथि। अहि सबरुम हमना अकटा खिशा मान यउंग अछि।
 २०-२२ वनख यूनान सण कथा। दनरंगाम नहेन नही, छगयन हम
 आ हमन अकटा यिसियोग एळ सौमम ०।७ नही। सामाँम
 सनवनजीक घनक वाअगीम खूव लगाम रुउल छलथि। हमन
 यिसियोग एळ दूनका ँषाना दs कदलखिह ज दस टा लगाम
 आनु। ठा वचान दसटा लगाम गाउलथि आ आवि नदल छलाह
 आकि नरुमाम हमसरु दखलहँ ज अकटा छार वच्चा संग दूनका
 किछु गय रलथि आ ठा याँचटा लगाम अहि वच्चाकँ दs दलखिह।
 जखन सनवन जी अउलाह गँ कदलथि ज ठा वच्चा दूनका रेया
 कहि सञ्चाधि कउलकथि आ याँचटा लगाम मँगलकथि- स काना
 नऽ दिगियेक- सनवनजीक कहव छलथि। आव यंकज यनाशन
 प्रसंगम की रल स दखी। प्रदीय विद्वानीजीक वटा प्रध्वकँ यंकज
 यनाशन नाम चाम्पू आ उगलस कलननक नवना देग छथिह आ
 गकन अनूवाद कनवा लल कहै छथिह। वचाना जान लगा कs
 अनूवाद कs देग छथि, ँली सावि ज जिनका ठा वच्चा कहै छथि-
 ज क्रान्तिकानी निचानक छथि (मार्क्सवादी!!!) स काना नीक यत्रिकाम
 ँली अनूवाद छयवा दथिह। मूदा छह मासक वाद चच्चाजी कहै
 छथिह ज नाम चाम्पू वला नवना दना (गल आ उगलस कलनन
 वला नवनाक अनूवाद नऽ नीक नहउ स निजक रs (गल। मूदा
 क्रान्तिकानी कवि (चानूक्ता सदा विवनध नीचाँम अछि) दूनू नवना

यहल यत्रिकाम य0। दे छथि- यहल-८५ म उगलस कलनन वला नवना छथि। छत्रि (आ स अनुवादक नूयम नदि वनन् मूल लेखक नूयम) आ उा वेन सह कs दल जाळ छथि। हमन सनदन जी अकटा वच्चा झाना रेंया कहलायन याँचटा लगाम अकना दs दे छथि। मूदा हमन यनाशनजी रगिजाक याँचटा लगाम निर्लजासाँ छीनि लेग छथि।

आ हम इनकन खिजवीन गखन कने छी जखन उा विदहम आळ्छरी वदलि हमना गानि यहेग छथि- इनकन नियल आळ्छरी नाळट कने छी। रुन सरसँ गय कने छी आ या0क सहयागसँ आनइ, यहल क यूनान अंक ररि जाळ्छ अछि जग दिनकन कृकय छत्रि।

Douglas Kellner

Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education

University of California-Los Angeles, Box 951521,
3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax
310 206 6293

Phone 310 825 0977,

<http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.htm>

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

अनुष्ठा कमल

Arun lives in Patna where he teaches English at the Science College of Patna University.

न७ ब्लॉक में

जहाँ नाज वन नह नय नय मकान

में अकान नासा रूल जागा दूँ

खाजगा दूँ गाकगा यीयल का य७

खाजगा दूँ टहा दूआ घन

ओन अमीन का खाली ट्रक७ जहाँ स वायं

मू७ना था मूम

रिन दा मकान वाद विना नंग बाल लाह क रूटक का

घन था ७७कर्मजिला

चल दगा दूँ

या दा घन आ७ 0कमकागा

नाज कूछ घट नहा हे

यहाँ मृगि का रनासा नहीं

अक ही दिन में यूनानी य७ जागी हे दुनिया

जैस बसं का गया याम७ का लोटा दूँ

जैस वैशाख का गया रादा का लोटा दूँ

ओन यूछा -

आ यही है वा घन?

आ चला यानी ठहा आ नहा अकास

शायद प्रकान ल काळी यहचाना ऊपन स दख कन

मेथिली राखा-साहित्य क या0क आ लखक वंश कँ की अहि प्रश्न
सबदक उफन अवथ जानवाक चाही। यंकज मा यनाशन उरुँ यंकज
यनाशन उरुँ अनूध कमल उरुँ उगलस कलनन उरुँ उदयकान्क
उरुँ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,
220.227.174.243 उरुँ..... नामक अहि व्यक्ति वद्द नास कच्चा
चिह्न —जना अम.अ.म प्रथम (अधीम सर्वोच्च स्तान?? यप्रकानिगाक
कास?? ॐ सर नरवनलालक गऊयन!! ज.अन.यू.क ल०कीसँ
द्वितीय अनूवाद कनाअव ज अहिसँ नाकनी रटि जअगेक आ रुन
गकना अयना नामसँ छयवा लव, प्रधवरसँ उगलस कलननक आ नाम
चाम्पूक अनूवाद कनवाअव आ अयना नामसँ छयवा लव, अनूध
कमल, श्रीकान्क दर्मा, ॐलानानी सिंह, गजद्व 0ाकून आदिक नवना
चानि कनवा ॐ सर लखक सरसँ दूनकन यनिदानजनसँ कहै छहि
ज अनूवाद लल कथा-कविता दिअ आ रुन गकना चाना कs अयना

नामसँ छयवा लेग अछि। दिदीम वेन रलाक वाद मेथिलीक सवा!
 (गोनीनाथकँ यद्दिन गानि यठे छहि आ रुन लिखिग मारी मैंगे
 अछि। यंकज मा यनाशन उरै यंकज यनाशन क ङ्गी हल छे ज
 नमध कूमान सिंदकँ ठाकनायन कविगा लिखै यठे छहि ..ककनासँ
 की चानन छी ज अनिद्रा यैसि (गल? अविनाश कँ गानि , श्रीधनम
 आ अन्लकान् कँ गानि , नामदर मा कँ गानि , नाजमादन मा
 आ नाजनइन लाल दास कँ गानि , सूर्यवच्चयादन-कदान कानन-
 गानानइ मा गन्ध- प्रारुसन मद्दु- नमध सरकँ गानि- मेथिली
 सर्जनाम नामदर माकँ गानि यठेग सहनसा चिठी आ सहनसा सरक
 साहिणकानकँ गानि यठेग नामदर माकँ चिठी, ङ्गी दूनू चिठी संग
 छयल!! चानक सीना जाउवाक अहिसँ नीक उदादनध रटव माथिला

यंकज मा यनाशन उरै यंकज यनाशन उरै अन्ध कमल उरै
 उगलस कलनन उरै उदयकान् उरै 220.227.163.105 ,
 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उरै....क यथार्थी #
 आखिनी सरुन यन निकलन तक / # यूनकानाशुकी आभाँ /
 # वऊ वाजान # मनध जल / # नाग्रि स नाग्रि तक # साला
 सव हँसकन निकल जागा हे अयून का अकला चीखणा छाउकन /
 # हरु चिह्न / उरै श्वान नूय संसान हे रूंकन द मख मान उरै
 कूङ्ग कूळ चादि७ ...की नोनक क लि७ उरै (गायवन्न उरै कानल
 चायक उरै अयन कानी मूँह उरै माहल्ला लाळ्ळ उरै यगनूकान
 उरै उदय प्रकाश उरै यहल उरै नवि रूषध उरै निनाला उरै
 वर्चअल थसा।

યંકજ યનાશન ઉરે અનૂધ કમલ ઉરે તગલસ કલનન ઉરે
 ઉદયકાન્ક ઉરે ૩૩૩ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,
 220.227.174.243 ઉરે..... દિનકન નિયલ આહ્લુતિરી દમ
 નાઢટ કરે ક્ષી આ હ્લી આવ અરિશ્વ ક્ષથિ અયન (શય ઝીવન
 મિસુન હાહ્લુત નદિ અયન કૂકૂચક સજા ગુગવાક લલા

હદિ લ્લેકમલનક ઝાં. ઝકીલ આ મિસુન હાહ્લુત વલા ચનિપ્ર મૈથિલ
 સર્જનાક વિનાધમ મૈથિલ-ઝન યગ્રિકામ ઝક દશક યદિન ઉઝાગન
 રસ (ગલ કલ મૂદા લાક દિનકા યાસેગ નહલા

આનશ્મ સદા હ્લી ઝકટા ચિદ્ધી મૈથિલીક સમ્યાદકક વિનાધમ દલદ્ધિ
 ઝ ક્ષયિ (ગલ આ ઝકન ઘૃધિગ રાષાક કાનધ રાહ્લુ સાદ્ધવ
 નાઝમાદ્ધન માર્ક માર્દી માંગે યહલદ્ધિ આ રૂન હ્લી મિસુન હાહ્લુત
 સદા ઝદિ સમ્યાદકસં લિશિગમ માર્દી મંગલદ્ધિ

ઝકટા આશ્વદ આ આદ્ધાન: સૂરશ કર્ધ આ સમસ્ત મૈથિલી-યમી-
 ગધ- હદિ મિસુન હાહ્લુતક લ્લેકમલિંગ આ ઝચૂઝક દ્ધાન અહ્લાં
 સરકં મૈથિલી ક્ષાઠિ કસ ઝહવાક આવથકાગા નદિ અઠ્ઠિ, કાનધ
 યાયક ઘેલા રનિ (ગલાક વાદ હ્લી આવ અરિશ્વ ક્ષથિ અયન
 (શય ઝીવન મિસુન હાહ્લુત નદિ અયન કૂકૂચક સજા ગુગવાક
 લલા

ઝ.અન.યૂ.મ ક્ષાપ્ર-ક્ષાપ્રા સરસં યાસુકાઠિ યન સાહ્લુન લસ ઝદિયન
 અયન નવના લલ યશંસા-યપ્ર ય0વેગ ઘમેગ અયથાંગ કથિગ (ગાહ
 મઝલિસુ(!!!). યદિલ કથા (ગાષ્ઠીમ ઝરૂન હ્લી સદ્ધનસામ સરસં
 યૂદ્ધન રિને ક્ષથિ ઝ સાદિચકાન વનવાસં કી-કી સર રાહદા ક્ષે

गखन ॐली अकटा याॐ आ यूनघानक लल अयथाँग मैथिल यूना-
 यीठीक प्रगिनिध्विन्न कने छथि, ऊ नाजमरुन मा जीक श्रद्धम मैथिलीसँ
 प्रम नऽ कने अछि। ॐली मिसुन दाॐउ सदा उहि सग्यादकसँ
 लिखिगम मारही मैंगलहि आ जखन ऊ मारु कऽ दलखिइ गखन रुन
 दूनका गानि पढव शुनु कऽ दलहि। दमनासँ लिखिग मल-मारही
 अस्त्रीकान रलाक वाद मिसुन दाॐउक माथ नाचव सारगविका। ऊ
 सनकानी नाकनी दा ॐदम-टेक, कसुमम ॐली ब्रैकमलन नहिग७ गँ
 दश जनून वचि देग७।

यंकज यनाशन उरु अन्ध कमल उरु उगलस कलनन उरु
 उदयकान्क उरु ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,
 220.227.174.243 उरु नाजकमल चौधनी.....उरु...

कक उरु अहि लखक वनग नहि जानि... नाजकमल चौधनीक
 अप्रकाशित यज्ञ (आव निदह मैथिली यज्ञ २००६-१० म प्रकाशित
 पृ.३६-४०) “वही-खागा”क अहि धूर्णा, चानि कला आ दंद-रुंद
 कनेवला यंकज यनाशन..उरु..उरु.. [गोनीनाथ (अनलकान्क)क अहि
 चान लखक लल प्रयूक्त शब्द- सग्यादकीय अँगिका अकूवन-दिसंवन,
 2009- जनवरी-मार्च, 2010- यंकज यनाशन प्रसंगम-] ज्ञाना
 “हिसाव” नामसँ छयवाडाल (गल- दखु

नाजकमल चौधनी

वही-खागा

अहि खागायन हम घसेग छी

संसानक सरटा हिसाव

...

...

हमन सरटा अयनाध, हान...सँ लीयल यागल

अछि अकान सरटा यागा

ह्मी हमन लालवही थिक जीवन-खागा

जीवन-खागा

यंकज यनाशन उरु अन्ध कमल उरु उगलस कलनन उरु
उदयकान उरु 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,
220.227.174.243 उरु नाजकमल चौधरी.....उरु...

झाना अकना अयना नामसँ अहि गनहुँ चानाउल गल

हिसाव

हिसाव कहि दनी (01न यन

उगाहल रल नहेण अछि

किगाव

ऊ रनि जिनगी लगवैण छथि

नाह-नाह क हिसाव-

दूनिया-जहान सँ रूनाक वनल

अंगणः वनि कऽ नहि जाळ्ळ छथि

हिसावक किावा

२००६

अहि लेखकक खौसा कऽ अयबबक प्रयाग वन्न नहि रल अछि आ
 ली नाम बदलि-बदलि अखना अहि सरु कार्यम लिख अछि, आव
 ली अयन धंवा-वाकनी सह्य बदलि लन अछि। यष्ट अछि ज
 एकना विनू कउन उग उठाउल जवक आवथका अछि।
 उनका समरु जानकारी अहाँ गूगल, विहा जगक दी स आग्रह
 आ एकना नीचाँ ली-यग्रयन सह्य अग्रसानि कनी सह्य अनूनाध।

vc.appoi ntments@anu.ac.i n,
 vedprakas_s@yahoo.co.i n,
 raj i vshukl a_hi ndi @yahoo.co.i n,
 ashutosh_1966@yahoo.co.i n,
 abdul al i m_dr@redi ffnai l .com
 RaneshHi ndi @gnai l .com

bi sari a.aj ay@gnai l .com
 tasneemSuhail @gnai l .com
 neraj hi ndi @gnai l .com
 ashi qbal aut@yahoo.i n,
 zubai ri farah@gnai l .com

यंकज यनाशन उरु अन्ध कमल उरु उगलस कलनन उरु उदयकान
उरु ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,
220.227.174.243 उरु.....

DO YOU KNOW "Fake Sahi tyakar" PANKAJ KUMAR JHA
 ALI AS PANKAJ PARASHAR.DO YOU KNOW WHAT THI S FAKE

GOLD MEDALIST DID AT VASANT MAHILA COLLEGE, KADAMBINI, DAINIK BHASKAR AND DAINIK JAGRAN ? DO YOU KNOW WHAT HE DID WITH HIS FAMILY, FRIENDS AND COLLEAGUES.

READ the following to believe it. this mentally corrupt should be treated in the same manner...

pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com besides other fake emails used by Pankaj Parashar on ISP **220.227.174.243**"
See his level.

अहां कं सूचनार्थ य(0न छी ज यंकज यद्दिन्ह २२ सव काज कनेन
नहय छलैग - aavinash

अहि चान लखक यंकज यनाशनक दिमागी हालतिक असली नय
गऽ सख ररग जाउ ठा नाम बदलि-बदलि अयन यूनना मालिकक
कम्प्यूटरसँ घुबिग यरु कने छल (सारान-अविनाश)।

Search Comments **220.227.174.243**



ALL

• Pending (0)

- Approved
- Spam (0)

<input type="text" value="220.227.174.243"/> <input type="button" value="Search Comments"/>	
Search Comments:	
<input type="text"/> <input type="button" value="Apply"/>	<input type="text"/> <input type="button" value="Filter"/>

<input type="checkbox"/>	Author	Comment	In Response To
<input type="checkbox"/>	ranvijay ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:07pm कौ व मादनवद, नंजी की ओलाद जिसका gauravshaali स्लेफिसर खग। वही (शह की वाग कनग। न मादनवद....१ साल आदिवासी मादनवद का वाग कनग। (शह की, साल vanmaanush अपनी श्वल दसि हे तितानी कनय लग्गी हे गन सउन साथी अविनाश की गनर, मादनवद....bhaunkna वेद कन....	
<input type="checkbox"/>	ranvijay ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:11pm अब मादनवद jagdeeshvar चर्चिदी, उर्क नंजी की ओलाद, मादनवद किस naali में येदा हुआ था सिवाय आलावना ओन ककदी के गुम कूठ, आगा हे मक लौउ....कूठ काम कन जिसस सक्ता रला ख मादनवद या गा नया नया कंप्यूटर कलाना सीखा हे या अपने कलकानी दाफ avi naash के साथ mil kar वदाली का भंरा कला नख हे स्सीलिउ स्लाना रौ नख हे मक लौउ...	उनसपा के वान में अर्बसगं स वल 22#
<input type="checkbox"/>	चर्चिक सय bi.nmt@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/31 at 3:42pm आ आदमी हन मई की दला आगि का सी समसा ख, आगिलाद के भंन में सी गल-गल फत पूरा ख उसका का (शस कूठ ववा नर गया हे का? उस नंग	आलक गामन जी कहां स आगी हे यह सया? 8#

	Author	Comment	In Response To
		<p>सिथानां का कम स कम प्रत्यय जग्गी ओन आलक गमन जेस सस्यानिा ओन विधान यस्तान की आलकना कनन का कऱ्सी नैतिक औन्नतान नही हो नरुना ओन जहनुखी राया स ँस कथिा लखक की मेषा समी आ सकी हो</p>	
	<p>खर्विक सप bi.mst@yahoo.com 220.227.174.243</p>	<p>Submitted on 2009/08/29 at 4:59pm</p> <p>प्रत्यय जी की आलकना स या आलक गमन की आलकना स कूठ खसिल नही खनवाला है. ँसस हिंदी समाज का का रला ख नख है? ँस गनर आनाय-प्रधानय स याओकां का का लना-दना है? वरुस का एक मुक्तम यन यईवाकन, अंगली यापन निरुल आना चाहिउ.</p>	<p>कोन है य म्वालियां की राया खलन वाला आलक गमन? 21#</p>
	<p>Pankaj Parashar pkj.pp@yahoo.co.in 220.227.174.243</p>	<p>Submitted on 2009/08/28 at 6:21pm</p> <p>मृगृषय,</p> <p>कल लिखी मनी ग्रंथिक्रया की अंमि यंकियां हैं- हैं, एक गतनीकी वाग यह ख सकी है कि ँन लागां का सामाग वोट स वरुल किया गया ख।</p>	<p>अनय का सव : खण है श्व-न-ग गमण मन आगे 16#</p>
		<p>मैंन यह अनरिङ्गा आदिन की, कि ख सक्ता है उत्ती निरुक्ति सामाग (श्वी मं इऱ्सी ख उत्ती कऱ्सी सूचना मूस नही है. ँसमं न गा वित्ती कथिा धात्रम श्व का जिक्र करी है ओन न मन खान या अवकान मं वरु वार्ग है, आ थाया की यलिगिस्त का गहरा आय कर नरु हो मनवाही थाया ओन अनवाही सलाह स ववना चाहिउ.</p> <p>ँस संदरे मं अनायास मनमाने थाया का विनन कनी। सून सेंटग की 1966 मं प्रकाशिा यूक्त Against Interpretation and Other Essays. की याद आ भऱ्सी। खदा सेन कन.</p>	

	Author	Comment	In Response To
	<p>Pankaj Parashar pkj.pp@yahoo.co.in 220.227.174.243</p>	<p>Submitted on 2009/08/27 at 6:34pm</p> <p>वाकी संदर्भ ओन फूल की सुवनाओं स दिलकश में अपुष्ट नहीं है, शक्ति कैयस गज हज महीना गुजन आग हो यन सन्नीय राखा कंद स ग वाकिरु है, सूची में दिखया गया है कि अस्तुविका आगि स एक री अस्तुविका प्रदसन नहीं है, अकि यी-अव.ओ में मन (मान निर्देशक नरु ओ.भाविंद प्रसाद अस्तुविका आगि स है ओन व वाकायदा नीउन हो दूसरी ओन सूची में दिखया गया है कि एक री उविती अस्तुविका प्रदसन नहीं है, अकि सूची कंद में रमान एक साथी हो मना ग्याल है कि उस नाम ओन री कल्लो है अ सूची की प्रुटियां का साद-साद उआगन कना हो</p> <p>हं, एक गकनीकी वाग यरु स सक्ती है कि मून लागां का सामाग्य सट स कलल किया गया स।</p>	<p>अनपु का सव : स्या है श्व-नश गमाग मन आगे 16#</p>
	<p>Rafugar jinita@yahoo.com 220.227.174.243</p>	<p>Submitted on 2009/08/25 at 5:35pm</p> <p>यान गामला शक्तिगा स्या आ नरु है . कस कल्लो स कल्लो आ नरी है? प्रान्ता(वा), रुक्मागं, ओवनां...यानी आगिवाद की सय है...सकज यकी ग राखना का सय नहीं है.</p>	<p>प्रलय जी की गीत प्रकट, स यकी है, आय सव नरु कन 53#</p>
	<p>ni chal chandran chandran25s@gmail.com 220.227.174.243</p>	<p>Submitted on 2009/08/20 at 4:18pm</p> <p>राखी लंग, आय सव मान या ना मान यनपू अस्त सय का आय अ व सीकान कन की प्रला अशी नाम क वरु मदान यकान-संयादक-विक्त अव यूनी गनरु स सोप्या गज हो</p> <p>यूवाधरु स अंशिंग सनन आकलत उनका उजल-दिजल लिखना, करी किरी अखान ओन उनक मालिका का टानाट कन आलवना कना, करी मानसुंठ क एक अखान क वान में कतीद लिखना ओन अव अयन मन्वायी रुद वरुन का सक सामन यन कन ववी में कन नरुना मूनक सोपयन की निगनी नहीं है ग या</p>	<p>प्रलयजी क विवान मानवाविननी है 30#</p>

<input type="checkbox"/>	Author	Comment	In Response To
<div style="border: 1px solid black; height: 100px; margin-top: 10px;"></div>			
<div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin-top: 10px;"> <input type="text"/> <input type="button" value="Apply"/> </div>			

मैथिल आन मिथिला ब्लॉग मॉडरन- ऊयनका सूचनाक अंगिनिक चानिक नवना ऊ हम अकरा ब्लॉगम...म यकनलो गकन वाद ऊ धूर्त लखक अउर कय ठाकना वदसूना कविगाक शत्रु द दलक, सन्ध्यादक हमन प्रमाध क उना दलक आ अयन जागिवादी ह्वाक रुन प्रमाध दलक आ आव वशीन वद क अकरा कविगा जागिवादी लाकनि दाना चाना कय अयना नाम कनवाक सूचना आयल अछि, ऊ अयन गलि स्वीकन वा रुन अयन नवना अउर कन दखा चाही हम हाजिन हायव अहंक समझ शीघ्र... जागिवादी साव क मानय रा यन मिथिलाक विकास लल. जावशीन वद क कविगा जागिवादी लाकनि दाना चाना कय अयना नाम कनवाक सूचना आयल छल आ हम कहन नही ऊ ऊ अयन गलि स्वीकन वा रुन अयन नवना अउर कन दखा चाही हम हाजिन रल छी अहंक समझ, चान महानाजक टटका नवनायन चान महानाजक मोसना राख्क कमंट आयल अछि जाहि स र्ही सिद्ध रल ऊ ऊ र्खाना वृमि गेल ऊ ठाकना चानि यकठा गलेका अकन कहू छै

चान-चान मोसना राखल - मैथिल आन मिथिला ब्लॉग सँ यंकज
यनाशनकँ निकालल जा नदल अछि। - मैथिल आन मिथिला ब्लॉग
मॉडरन

Recently Some Maithil Brahmin Samaj Organisation has started selling prizes in the name of Yatri (Vaidyanath Mishra, Nagarjun) and Kiran (Kanchinath Jha). There has been trend recently to grant these prizes to those intellectual thieves who are basically opposed to the ideology's of Kiran and Yatri (Nagarjun). The caste based organisations are killing the spirit of Yatriji and Kiranji, recently the fraud Pankaj Jha alias Pankaj Kumar Jha alias Pankaj Parashar alias Dr. Pankaj Parashar) was stage managed to get this casteist award, The lecturer of Hindi at Aligarh Muslim University, just appointed as adhoc staff, will teach now how to lift verbatim articles of Noam Chomsky and Douglas Kellner and poems of Illarani Singh, Rajkanal Chaudhary, Gajendra Thakur and Arun Kanai to his students. His Samay ke akanait (समय केँ अकानैत) is lifted from Magadh of Srikant Verma (श्रीकान्त वर्मा- मगध) and his Vilambit Kaik Yug me Nibaddha (विलम्बित कालक युग मे निबद्ध) is

collection of pirated poems of Illarani Singh, Raj kamal Choudhary, Gajendra Thakur, Srikanth Verma and others. श्री संग्रह शूलानानी सिंह, श्रीकान्त वर्मा, गजध्र 0कून, नाजकमल चौधरी आदि कविक यंकज यनाशन झाना चाना ७ल नवनाक कानध वेन क ७ दल (गला "नचना"यप्रिकाक कथिग अग्निथि सन्थादकक नूयम यंकज यनाशन झाना कवि-कहानीकान सरसँ नचना सदा मँगवाउल (गल आ गकना अयना नामसँ छयवाउल (गला श्री छद्म साहिष्णुकान यनाशन (गप्रक (!!))यंकज कृमान मा उरु यंकज यनाशन वद्गा लखकक अप्रकाशित नचना अनूवाद कनवा लल सदा ललक आ अयना नामँ छयवा ललक। या0कक आग्रहयन आर्काश्वम श्री गथ नाखल जा नदल अछि। — सन्थादक, निदह

घरबाली आ बगिया। संगहि सडक नाटक अछि : चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कौटा सिंगार आदि।

द्वितीय : रूपम श्री (सहरसा)

सुश्री रूपम श्रीक जन्म सहरसामें भेलन्हि। अहाँ स्नातकमे पढ़ैत छी संगहि संगीतसँ सेहो प्रभाकर कऽ रहल छी। रंगमंचसँ लगाव अहाँकें सुजीक प्रयाससँ १९९५ सँ भेल। रूपम श्री विभिन्न संस्था संग रंगमंच कऽ रहल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि इष्टा, पंच कोसी। हिनका द्वारा कएल गेल महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुति अछि : मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा, पाँच पत्र। रूपम श्रीक प्रिय नाटककार छथि महेन्द्र मलंगिया आ प्रिय निर्देशक छथिन उत्पल झा। मैथिली रंगमंचमें काज क'र' मे नीक लगैत अछि। २००३ मे खगौल, पटनामे अहाँकें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रीसँ सम्मानित कएल गेल, तरंग महोत्सवमे उत्कृष्ट नृत्यक लेल द्वितीय पुरस्कार राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ अहाँ ग्रहण केलहुँ।

तृतीय : कल्पना मिश्रा (दिल्ली)

सुश्री कल्पना मिश्राक जन्म मिथिलाक नागदह गाममे भेलन्हि। बच्चेसँ कल्पना जीक लगाव संगीतसँ भऽ गेलन्हि। अहाँ शास्त्रीय संगीतक प्रशिक्षण प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ प्राप्त केलहुँ। अहाँक शिक्षा दिक्षा बेगूसरायमे भेल। पहिने हिनक झुकाव मैथिली संगीत दिस भेल, तत्पश्चात ई अभिनय दिस सेहो आकर्षित भेलीह। अहाँ दिल्ली स्थित मिथिलांगन संस्थासँ रंगकर्म कऽ रहल छी। मैथिलीक संग भोजपुरी, हिन्दीमे सेहो अहाँ लगातार अपन पहचान बनेबामे सफल भेलहुँ अछि। रंगमंचक संग अहाँ लगातार फिल्म, टेलीविजनक लेल काज कऽ रहल छी। कल्पना जी कतेको मैथिली नाट्य प्रस्तुतिमे अपन अभिनय प्रतिभा देखा चुकल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि : जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि। हिनक इच्छा छनि जे महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव आएबाक चाही। कल्पना जीक प्रिय निर्देशक छथि संजय चौधरी आ प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया।

सूचना: पंकज पराशरकें डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (<http://www.box.net/shared/94xgdy37dr>) बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५, १६४.१००.८.३, २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....पंकज पराशरकें बैन कए विदेह साहित्य आन्दोलनसँ निकालल जा रहल अछि।

सम्पूर्ण दस्तावेज मूल आ पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ , २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....क चोरुक्का नीचाँक लिंकपर सेहो अछि।

विदेहमे किछु अनोनिस ई-मेल अएलाक बाद ओकर इन्क्वायरीक बाद चेतना समिति द्वारा पंकज पराशरकेँ देल सम्मानकेँ वापस लेबा लेल आ एहि लेखककेँ बैन करबा लेल ई हमर (चेतना समितिक आजीवन मेम्बरक हैसियतसँ) आधिकारिक अनुरोध अछि आ इन्क्वायरीक विस्तृत विविचन नीचा देल जा रहल अछि। कृपया चेतना समिति एहि विषयपर अपन आपात बैसकी करए आ उचित निर्णय लए से अनुरोध।- गजेन्द्र ठाकुर

इन्क्वायरीक विवरण:

पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो Douglas Kellner क Technopolitics क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक रूपमे नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक। तकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२. एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुएए तँ) आ आन कार्यवाही लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि। ३. पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljb@yahoo.co.in वा info@deskhaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ nishikant@jagran.com, sanjay@jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट www.deskhaal.com पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुएए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ

धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छतपर हम आ हमर एकटा पिसियौत भाइ साँझमे ठाढ़ रही। सोझामे सरवनजीक घरक बाअड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पिसियौत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बेचारे दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि रस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवन जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका भैया कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम मँगलकन्हि- से कोना नञि दितियैक- सरवनजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की भेल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बेटा प्रणवकेँ पंकज पराशर नोम चोम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ अनुवाद कऽ दैत छन्हि, ई सोचि जे जिनका ओ चच्चा कहै छथि- जे क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) से कोनो नीक पत्रिकामे ई अनुवाद छपबा देखिन्ह। मुदा छह मासक बाद चच्चाजी कहै छथिन्ह जे नोम चोम्स्की बला रचना हेरा गेल आ डगलस केलनर बला रचनाक अनुवाद नञि नीक रहए से रिजेक्ट भऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चोरुक्का सेहो विवरण नीचामे अछि) दुनू रचना पहल पत्रिकामे पठा दै छथि- पहल-८६ मे डगलस केलनर बला रचना छपितो छन्हि (आ से अनुवादक रूपमे नहि वरन् मूल लेखकक रूपमे) आ ओ बैन सेहो कऽ देल जाइ छथि। हमर सरवन जी एकटा बच्चा द्वारा भैया कहलापर पाँचटा लताम ओकरा दऽ दै छथिन्ह मुदा हमर पराशरजी भातिजो क पाँचटा लताम निर्लज्जतासँ छीनि लैत छथि।

आ हम हुनकर खोजबीन तखन करै छी जखन ओ विदेहमे आइडेन्टिटी बदलि हमरा गारि पढ़ैत छथि- हुनकर रियल आइडेन्टिटी नाइट करै छी। फेर सभसँ गप करै छी आ पाठकक सहयोगसँ *आरम्भ*, *पहल* क पुरान अंक भेटि जाइत अछि जतए हिनकर कुकृत्य छन्हि।

डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइडक कथा अंग्रेजी विषयमे स्कूलमे पढ़ने रही। एकटा वैज्ञानिक रहथि डॉ. जेकील हृदयसँ कलुषित। मोन करन्हि जे चोरि-उच्छागिरी करी। से एकटा द्रवक खोज कएलन्हि जकरा पीबि कऽ ओ मिस्टर हाइड बनि जाथि आ रातिमे चोरि-उच्छागिरी करथि। एक रातुक गप अछि जे मिस्टर हाइड ककरो हत्या कऽ भागि रहल रहथि मुदा भोर भऽ गेल रहै से लोक सभ हुनका खेहारए लगलन्हि। ओ डॉ.जेकीलक घरमे पैसि गेलाह (कारण डॉ.जेकील तँ ओ स्वयं छलाह) आ केबार भीतरसँ लगा लेलन्हि। लोक सभ चिन्तित जे डॉ. जेकीलकेँ ई बदमाश मारि देतन्हि से ओ सभ केबार पीटए लगलाह। मिस्टर हाइड द्रव पीअब शुरू केलन्हि मुदा ओहि दिन दवाइमे रिएक्शन

नहि भेलैक आ हुनकर रूप डॉ. जेकीलमे नहि बदलि सकलन्हि। आब एहि कथाक अन्तमे मिस्टर हाइड माथ नोचि रहल छथि जे हुनका अपन समस्त पापक प्रायश्चित मिस्टर हाइड बनि करए पड़तन्हि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर रियल आइडेन्टिटी हम नाडट करै छी आ ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

मैथिलमे ई एकटा तथ्य छै जे चुपचाप जे गारि सुनै अछि तकरा कहल जाइ छै जे ओ बड़ड नीक लोक छथि। मुदा समए आबि गेल अछि मिस्टर हाइड सभकेँ देखार करबाक आ ओकरा कठोर सजा देबाक। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि। मैथिलीमे बहुत गोटे छथि जे हिन्दीमे बैन भेल लेखककेँ पोसै छथि (मैथिली सेवाक लेल) जे जखन ककरो गारि पढ़बाक होए तँ ओ तकर प्रयोग कऽ सकथि।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइड बला चरित्र मैथिल सर्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पोसैत रहल।

आरम्भमे सेहो ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे देलन्हि जे छपि गेल आ ओकर घृणित भाषाक कारण भाइ साहेब राजमोहन झाकेँ माफी माँगए पड़लन्हि आ फेर ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी माँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुभेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घेला भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.मे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडलिस्ट(!!!) मिस्टर हाइडकेँ चिड़ैक खोता तोड़बाक सख शुरुहेसँ छन्हि। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने फिरै छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी माँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखन्ह तखन फेर हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हाइडक माथ नोचब स्वाभाविके। मिस्टर हाइड ककरो इनकम टैक्स, कस्टम वा सरकारी नोकरीमे देखै छथि, सुनै छथि तँ पाइक मारल जेकाँ हिनका मोनमे ब्लैकमेलिंग कुलुबुलाए लगै छन्हि, प्रायः आनन्द फिल्मक एक गोट कलाकार जेकाँ- जे एहने मिस्टर

हाइड लेल कहै अछि- जे ई डॉक्टर रहितए तँ किडनी बेचितए, से ओ जतए छथि ओतहु ब्लैकमेलिंगक धन्धा शुरू कैये देने छथि। मुदा चिड़ैक खोता उजाड़ैत-उजाड़ैत मधुमाखीक छत्ता उजाड़बाक गल्ती एहेन ब्लैकमेलर कैये दैत अछि। जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जरूर बेचि दैतए।

जे कियो सूचनाक स्वतंत्रताक नाम पर, अन्तर्जालपर स्वतंत्रताक नामपर वा साहित्यिक समालोचनाक नामपर गारि पढ़ैत अछि तँ सर्वदा मोन राखू जे ई सभ स्वतंत्रता अहूँकेँ प्राप्त अछि। एहि घटनाक विषयमे अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ हिन्दीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करेबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल ggajendra@gmail.com पर सूचित करू।

कोना पकड़ाएल ई चोर:-स्टेप बाइ स्टेप:-

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४८ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३.

Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४५ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

pahal=- ८६, aarambh -२३ aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.

Reply ०१/२५/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

<http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed२५३a/newDK/intell.htm> ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-८६ ke page १२५-१३१ par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply ०१/२४/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake

232 विदेह : सदेह : २ (विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल)

Me" hoinh aa Aarambh (ank २३, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March २०००) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:०२ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२३/२०१० at ११:४० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses parasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.
Reply ०१/२१/२०१० at १०:०० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
the https host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com
Reply ०१/२१/२०१० at ०८:५० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, the organisation being taken into confidence.
Reply ०१/२१/२०१० at ०६:१३ PM
१४

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३ aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.
Reply ०१/१८/२०१० at ११:१९ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi

Reply ०१/१८/२०१० at ०९:२७ PM

from ISP २२०.२२७.१७४.२४३ of Dainik Jagran he abused many times earlier too to others. अविनाशकें सेहो २२०.२२७.१७४.२४३ आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला खतम कऽ देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घृणित छैक जे एतए नहि देल जा रहल अछि।

पाठकक संदेश: एहि घटनाक्रमपर

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu

Dear Gajendra

thanks for the detective work. was there a response?

best regards,

Douglas Kellner

Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education

University of California-Los Angeles

Box 951521, 3022B Moore Hall

Los Angeles, CA 90095-1521

Fax 310 206 6293

Phone 310 825 0977

<http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html>

dear Gajendraji,

apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.

Rajiv K Verma

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi

shridharam

ओकरा सार्वजनिक नहि करबै। अहां कें सूचनार्थ पठेने छी जे पंकज पहिनेहो इ सब काज करैत रहय छलैए।

avinash

ठीक छै--सम्पादक।

Dear Gajendra g

You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com really a adventurous collection. I will also find some time to learn the article published through the videha. Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head jai Maithili jai Mithila

Sunil Mallick

President

MINAP, Janakpur

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.

shyamanand choudhary

Namaskar.

Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.

Dr. Ramanand Jha' Raman'

गजेन्द्र जी ,

चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहि | यद्यपि हमहू चेतना क स्थाई सदस्य | जे हो. मुदा निंदास्पद घटना तँ ई थिके तँ दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यांकनक हमर अपन स्नेहही स्वभाव, एहि दुर्घटनाक बाद तँ आब चिंता मे ध' देलकय|

देखी,

हम अपने विस्मित भेलहुँ। बहुत दुःखद दृश्य | सृजन विरुद्ध साहित्यिक सन्दर्भ मे ई घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुरूप प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत सस्नेह,

गंगेश गुंजन.

PRIYA MAITHILJAN

APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN
VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. DHANYABAD.
SAPREM,

PK CHOUDHARY

Gajendra babu

pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke

seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.

subhash Chandra yadav

प्रिय ठाकुरजी!

(माननीय संपादक)

“विदेह ई-पत्रिका” [मैथिली]

एखन धरिक उपलब्ध साक्ष्यक आधार पर हम अपनहिक संग जाएब पसिन्न करब।

शंभु कुमार सिंह

Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had translated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar's duplicacy

Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had translated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more

In the past Pankaj Parasar was accused for lifting the senses and emotions from poems of doyens of Hindi and Maithili poets. What Pankaj did should be condemned. I regret for him.

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country .-

VIJAY DEO JHA

Dear Gajendraji,

I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.

हां अपन मेल में लिखने छी जे विदेह आर्काइव से संबंधित लेखक'क सबटा रचना हटा लेल जायत। अहि से आर्काइव सं ई प्रसंग सेहो, एकर साक्ष्य सेहो मेटा जायत। हमर मत ई जा साक्ष्यब रहबाक चाही निक आ अधलाह दुनु तरहक काज'क। अहां अप्पसन कामेंट आ निर्णय सेहो आर्काइव मे जा के संबंधित रचना के पोस्टा-स्क्रिप्टर के रूप मे भविष्या'क पाठक'क लेल सुरक्षित राखि सकैत छियन्हि।

236 **विदेह : सदेह : २ (विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीचल)**

ई दोहरेबाक बहुत औचित्यक नहि जे विदेह निक लागि रहल अछि आ अहांक परिश्रम एकदम देखा रहल अछि ।
ईति,
सदन ।

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole.

I feel proud for the person like you who shows the courage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean.

Thanx for enlightening me on the subject.

Regards,
Bhalchandra Jha.

पंकज पराशरकेर एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पच्चीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म,म,डॉ, सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कारुणिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह । कहबाक तात्पर्य जे जँ हम मैथिल दरभंगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी तँ ई कोन बड़का गप । निश्चये एहन रचनाकारकेर सङ्ग कङ्गर डेग उठाएब आवश्यक ।

ajit mishra

Dear Gajendrajee,
We should take strong step to prevent such intellectual cheats.
My support is always with you.

K N Jha

This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,

Prof. Udaya Narayana Singh

प्रियवर ठाकुर जी,
मैथिल साहित्यकार आब साइबर क्राइम सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल ।
पंकज पराशर के नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी ।

बुद्धिनाथ मिश्र

Sampadak Mahoday

Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee
ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak
achhi
Sadar

SHIV KUMAR JHA

गजेन्द्र भाई,

नमस्कार ! मैथिली मे एहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि । किछु व्यक्ति एहि धंधा मे अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेको अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि । पंकज जीक पहल मे छपल लेख के हम सेहो पढ़ने ही आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख के सेहो पढ़लहु । हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि लैतथि मुदा हुनका एतेक ज्ञान रहितनि तखन की छल ।

एतबे नहि , हिनक बहुत रास कवितो अंग्रेजी साहित्य स' हेर-फेर कयल गेल अछि । खैर ! जे करथि ... । मुदा एहि बेर कहाबत ठीक होबाक चाही " सौ सोनार के त' एक लोहार के " । प्रकाशन मे जे भी कियो व्यक्ति गलती क' रहल छथि हुनका गंभीर क्रिमिनल बुझबाक चाही । धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जोरदार तरीका स' एहि गप्प के उठैलहु ।

अहाँक

प्रकाश चन्द्र ।

pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal
kamini

Gajendr jee,

maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai.

हमर मनतब एतबे, जे एक बेर अहां देखार क देलहुं, आब छोड़ि देल जाओ. हिन्दीयो मे एहिना भ रहल छै. बेर बेर आ खराब भाषा मे लिखल मोन के दुखी करैत अछि. फेर लागैत अछि जे अहि मे समय किअैक नष्ट करी?

हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुं मुदा आब 30 बरख से मैथिली मे लिखनाक बाद आब देखल जे एक ओर

1 मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शोफलिका जी के बाद यदि किओ नाम लैत अछि त हमर.

2 एखनो कोनो पत्रिका बै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइते छै.

3 एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी.

4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहेन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नयि आएलए.

- 5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथवा हमर रचना पर किछु नयि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशक केर चर्च होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नयि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै.
- 6 एतेक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोटा लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुनः टाइप करबा के अहाँ लग पठायब.
- 7 जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नयि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नयि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि.
- 8 हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझने रहलाह जे हम मैथिली मे लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नयि छी, तँ हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नयि नोटिस करताह, कहियो किछु नयि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आग्रह कारणे हम हुनकर बात नयि मानलियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की?
- 9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियो. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाइ, चेतना समिति सनक, सभ बेर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक केर पोथी सभ बेर 5-7 टा निकालैथु, से नयि होबैत छन्हि.
- 10 हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नयि, यदो ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नयि भेटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाके रूप मे किऊ ल' सकि छै. एकरा सभ के उजागर करी.
- 11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जतेक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित.
- 12 लिली रिक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नयि बूझल त कोनो मैथिल साहित्यकार से पूछि सकैत छलाह. ई तहिने भेलै, जेना एक बेर एक गोटा चैनल ऋषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसार आ. जानकी वल्लभ शहस्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांगल गेलैय.
- 13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दू तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो अई पर कोनो विचार नयि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली जी से साहित्य अकादमी के अनुवादक अधिकार दियाबे मे मदद करी. आरे भाई, अहाँ के अनुवाद से मतलब अछि ने, आ जहन हम अनुवाद क; के देब' लेल तैयार छी तहन अकादमी के किअयैक अधिकार चाही? अई लेल जे अकादमी अपन पसीनक आदमी के अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नयि भेलैये. अकादमी से फेर कोनो पत्र नयि आएल अछे. अनुवाद तैयार राखल छै. लिली जी आब बहुत बुजुर्ग भ; गेल छथि. हुनक मात्र इयैह इच्छा छै (आ बहुत स्वाभाविक) जे हुनकर पोथी सभ हुनका सोझा मे प्रकाशित भ; जाए.
- 14 लिली जी के पोथी हिन्दी मे आनबाक श्रेय हमरे अछि, ई मनिहँ ओकरा रेकर्ड केनाए मैथिल

समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.

15 मैथिली के भारतीय ज्ञानपीठ से पुस्तक प्रकाशन लेल हमही आगां एलहुं आ प्रभास जी आ लिली जी के पोथी बहार भेलै. भारतीय ज्ञानपीठ से मैथिली पुस्तक प्रकाशन के श्रेय हमरे छन्हि, ईहो मनैत ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.

गजेन्द्र जी, मैथिलीक ई सभ मानसिकता पर आन्दोलन करी जाहि से रचनाकार आ वरिष्ठ रचनाकार सभ के अपमानित नयि होब' पडै. अहां चाही त' एकरा विदेह पर द' सकै छी.

हम दोसर बात सेहो लिखि के पठाब. मुदा हम फेर कहब, जे हम व्यक्ति के नयि संस्था आ व्यक्ति के मानसिकता के दोष देबन्हि. लोक पढथु आ पूचाथु ई स्वनामधन्य सभ से जे जकरा से अहां के गोलौंसी अछे, तकरा पर अहां लिखब आ जकरा से नयि अछे, जे मौन भावे लिखि रहलए कोनो विविआद मे पडल बगैर, हुनका लेल ई व्यवहार?

-विभा रानी.

Shri gajendraji

good work.

Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat.

chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak

chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi.

Saadhuvaad.

manoj pathak.

संगहि "विदेह" केँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ १४ जनवरी २०१०) ९३ देशक १,०४२ ठामसँ ३६,७१७ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी.सँ २,१९,८९१ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।- गजेन्द्र ठाकुर

संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबादनि), पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मादैं.]

१. श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२. श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद। आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।



रमेश

बहस- पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी
अध्याय थिक

विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकें जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। “विदेह”क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अइ पोल-खोल लेल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निबद्ध रहत, से “समय कें अकानैत” कहब कठिन अछि।

साहित्योमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनुहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढाइत रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अइ बेरक चोर ‘सिन्हा चोर’ निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि-सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकें मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्कृत केलक अछि आ समीक्षाक

चासनीमे चोरायल कविता सबकेँ बोरी देल गेल अछि ।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन “बोल्डनेस” सेहो प्रदर्शित केलक अछि । एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः “डेयर डेभिल” होइत अछि आ अपन अनुचित । सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि । फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै । ओ नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखेबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि । ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि । एहेन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि । वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरुरति किएक होइत छनि?

“विदेहक” “इनक्वायरीक विवरण” पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि । पहल-८६ आ आरम्भ-२३ मे जे पोल खूजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेवाक चाहैत छल । मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक । “मैथिल ब्राह्मण समाज”, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा “विनोद” आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि । ई संशयविहीन

अछि जे पुरस्कृत करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत । “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बावजूद एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करेवाक वा आने कोनोटा कार्रवाई करवाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सर्द गुम्मी लधने अछि । एहेन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि । “विलम्बित कएक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेरो विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता केँ विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल अँखिगर चोरे एना कऽ सकैत अछि । सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय । अंततः मि. हाइडक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि । तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किएक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कयल जा सकैत अछि । “टेक्नो-पोलिटिक्सक” बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि । प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि । प्रो. अरुण कमलक “नये इलाके में” सेंधमारी कऽ कऽ “समय कें

अकानल” जा सकैत अछि। आर तँ आर, अइ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बढौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ “विलम्बित कएक युग...” पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ “मिथिला दर्शन” (५) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत चछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक “टेक्नो पोलिटिक्स”!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ-२३ आ पहल-८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक “चन्द्रभागा में सूर्योदय” आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछऽवला कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? एकरा “प्रायोजित समीक्षा” किऐक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ वेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओइ सभ कविताक कनियों “छाया”क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ? “सभ्यताक सभटा मर्मन्तक पुकार”क नोटिस लेबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मन्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक “पोजीशन फॉल्स” भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियें रहनि, उदय चन्द्र झा “विनोद” केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे “पराशर” मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि

केनाइ “पराशर” महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारें “मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि”(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ “विष-वमन” कोना ने लगौक? हुनका सन “पढ़ाकू” समीक्षक-पाठककेँ “फॉल्स पोजीशन”मे अननिहार “एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड” साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किएक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किएक नहि केलक? डॉ. रमानन्द झा “रमण” इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किएक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बादो? नचिकेताजी नेटपर निन्दा करताह आ “विदेह”मे छपत तँ “मिथिला दर्शन”मे किएक नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओही पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा

रहल? एहेन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता कियेक नहि बुझाईत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ई चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वरेण्य आ वरीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब कियेक नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु “ठिक्के छै भाइ”? अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाईत अछि जे समीक्षकगण दारु पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक “टेक्नोपोलिटिक्स” तँ छपि गेल “पहल”मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पूछथु जे नोम चोम्स्कीवला रचना कतय गेल, की भेल, कोन नामेँ छपल? पंकज पराशरक नामेँ कि पदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ई रिसर्च एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरिक पोल खूजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से कए बेर? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़वाक आदति तँ पुरान छनि डॉ. महाचोर केँ। ककरो “सरीसृप” कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोंसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक

सभ गुणसँ परिपूर्ण डॉ. पॉल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करवाक बड़का गुण छनि तँ हिनका नामी फुटबॉल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ “विश्व-कप”केँ दौरान अइ “अमोघ अस्त्रक” उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय ।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी । ई उद्घोषणा करवाक की बेगरता रहैक- से आइ लोककेँ बुझा रहल छैक । अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ “टिप्पणीक”क्रममे मैथिली-कथाक “टर्निंग प्वाइन्ट” मानने छलाह । आइ ओ “टर्निंग प्वाइन्ट” ठीके एक हिसाबेँ “टर्निंग प्वाइन्ट” प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ “नहि” हटि गेल अछि, हिनकर तेबारा चोरिसँ । हिनकर पहिल चोरि (अरुण कमलक कविता- नए इलाके में) क निन्दा प्रस्तावमे “मामाजी” आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ “आरम्भ”केँ पठौने छलाह । आइ ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कन्छी काटि कऽ वाम-दहिन ताक-झाँक करवाक लेल बाध्य छथि । द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि । अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे “एकरा सार्वजनिक नहि करबै” । नुका कऽ सूचना देवाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेवाक डर वा कोनो “टेक्रोपोलिटिक्स”(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि । जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द्र झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र

झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा “रमण”, विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक “प्रबल भाव-भंगिमा” साहित्यकारोक “मेंहायल आवाज”क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाले कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मिलन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्णीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणें निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपें) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणें जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझले नहि छनि जे हुनका लोकनिक

बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने “इजोड़ियाक अडैठी मोड़”। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछि। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे “जड़”लोक छै तँ “चेतन” लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करवाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेवाक होइसँ बँचवाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिवालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काहि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक शृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेवाको चाही आ तकरा देखार करवाक “बोल्डनेसो” हेवाक चाही। “चाही”वला पक्ष साहित्यमे बेशीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक “चुप्पी” एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम

तँ करिते अछि । जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझैतैक? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै । तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेवाक चाही ।

